चकमक

जुलाई, 2003 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00





अपाला मिश्र, तीसरी, देहरादून, उत्तरांचल



प्रीति विश्वकर्मा, आठवीं, देवास, म.प्र.

आवरण : शोभा घारे

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष -19 अंक -1 जुलाई 2003

क्या-क्या है इस अंक में ?

हरा ताज.....

चूहों की बस्ती एक पहाड़ी पर मज़े से रह रही होती है। एक दिन पहाड़ी चूहों के बिल भरना शुरु कर देती है। चूहों को वहाँ से जाना पड़ता है। चूहों और पहाड़ी के टकराव और दोस्ती की दिलचस्प कहानी.....पेज15 पर!

डनलॉप जी का टायर...

साइकिल तो तुम भी चलाते होगे! पहले साइकिल चलाना इतना आसान काम नहीं होता था। इसमें आज की तरह टायर भी नहीं होते थे। साइकिल में टायर लगाने की कहानी भी कम मज़ेदार नहीं है। पढ़ो पेज....9 पर

काँटों का घरौंदा....

अगर तुम्हें घुमक्कड़ी का शौक है तो तुमने भी एक चलते फिरते काँटों के गुच्छे को जरूर देखा होगा ! हाँ बिल्कुल सही! ये महाशय बबूल पर भी झूलते हुए पाए जाते हैं। इनके बारे में और जानने के लिए पढ़ो पेज...37 पर

कहानी

कविताएँ

खेल-प्रयोग

हर बार की तरह

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात....



दोस्तो,

उम्मीद है तुम्हारी छुट्टियाँ मज़े से बीती होंगी। पढ़ाई और बारिश दोनों शुरु हो गई हैं। कैसा लगा काफी दिनों बाद स्कूल जाना! कुछ नए दोस्त भी बन रहे होंगे। शायद कुछ टीचर भी बदल गए होंगे। कुछ टीचरों से पीछा छूटने की खुशी होगी तो कुछ के छूटने का दुख भी जरूर होगा।

बारिश और स्कूल यूँ तो साथ साथ आते हैं पर दोनों कितने अलग हैं! एक का हमें बेतरह इंतजार होता है पर दूसरे का ....उसके बारे में तो तुम जानते ही हो। बारिश से हटने का मन नहीं करता और स्कूल में तो पहुँचते ही छुट्टी का इंतजार रहता है। कितने स्कूल ऐसे होंगे जिनमें बच्चों को मज़ा आता होगा।



मेहर की उमर पाँच साल है। पहले दिन उसने स्कूल जाने में आनाकानी की। उसे अपनी क्लास टीचर से डर लग रहा था। मुश्किल से स्कूल गई। जब लौटी तो खुश खुश लगी....सबको बड़ी हैरत हुई। मेहर ने बताया ...जो नई क्लास टीचर हैं न वो बात करने पर डाँटती भी नहीं हैं..बहुत अच्छी हैं ! टीचर के दोस्ताना व्यवहार में कितनी ताकत है।

क्या बच्चों की खुशी के लिए यह बड़ी कीमत है?

काश सभी नकचढ़े टीचरों की जगह मेहर की क्लास टीचर जैसी टीचर आए।

और तुम स्कूल का इंतजार भी बारिश की तरह करो!

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-1 जुलाई 2003

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सहयोग
राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोन : 2463380
ई-मेल : eklavyamp@vsnl.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।





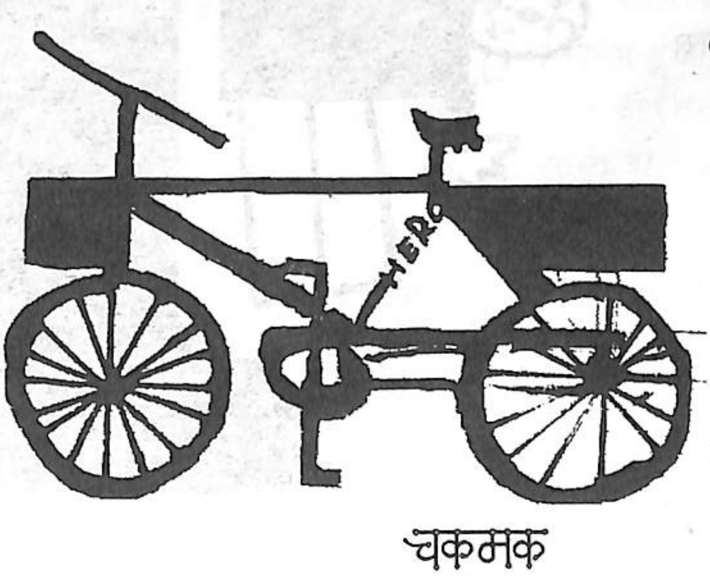
मेहर, पाँच साल, भोपाल, म.प्र.

मैं कुछ बनना चाहती हूँ

मैं छोटे में बहुत सोची कि मैं क्या बनूँ। अब सोचा है कि पापा का ही कहना मानूँगी। पापा का कहना है कि मैं डॉक्टर बनूँगी। अब मैंने सोच लिया है कि मैं बड़े होकर डॉक्टर ही बनूँगी। इसके लिए मुझे खूब डटकर पढ़ाई करनी पड़ेगी। और मैं पढ़ाई करूँगी। मुझे विश्वास है कि एक दिन मैं डॉक्टर ज़रूर बनूँगी।

कई कहते हैं कि डॉक्टर बनने के लिए विज्ञान ज्यादा अच्छा होना चाहिए। उसके लिए विज्ञान ही लेते हैं। फिर मैंने सोचा कि विज्ञान ही ले लेंगे। परन्तु मैं विज्ञान के अलावा और भी विषय अच्छा करना चाहती हूँ। मेरे परिवार में मेरे बड़े पापा डॉक्टर है। मैं उनसे डॉक्टर बनने की राय पूछूँगी और वे मुझे सही राय देंगे। अगर मैं डॉक्टर बनी तो बड़ी-बड़ी बीमारियों का इलाज करूँगी।

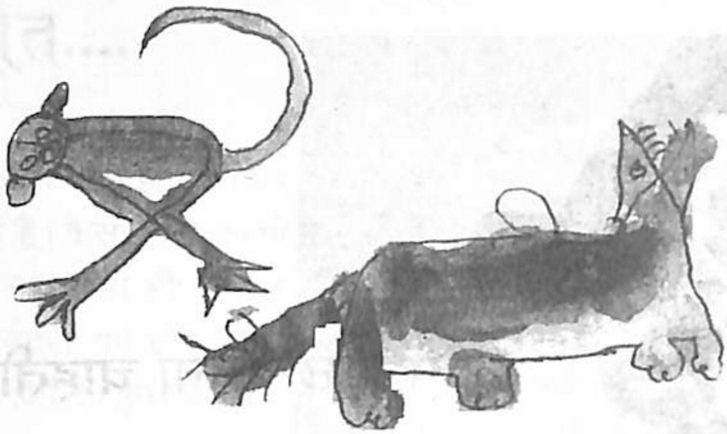
● अमृता दुबे, छठवीं, देवास, म.प्र.



हबीब अनवर, छटवीं, जावद, म.प्र.



मेरा पन्ना



भीमसिंह, चौथी, मोरगढ़ी, हरदा, म.प्र.

रात में बारात

एक बार की बात है। हम लोग बारात में जा रहे थे। हम आधे रास्ते तक पहुँचे वहाँ जंगल था। जहाँ हमारी बस खराब हो गई। ड्राइवर ने कहा इंजन में खराबी है। हमें यहीं रुकना पड़ेगा। रात बहुत हो चुकी थी। बस में बल्व जल रहे थे। जिसकी रोशनी दूर तक जा रही थी। मैं और मेरी सहेली बाहर बैठ थे और हमें प्यास लग रही थी। हम दोनों जंगल में पहुँच गए। हमें कुछ दूरी पर पानी दिखाई देने लगा। जैसे ही हम आगे बढ़े वैसे ही एक साँप पेड़ पर से नीचे गिरा। हम डर गए। फिर मेरी सहेली ने कहा हमें आगे नहीं जाना चाहिए। फिर हम दोनों ने उस साँप को पत्थर मारकर भगा दिया। हम जैसे ही आगे बढ़े वैसी ही मेरी सहेली के पैर पर साँप लिपट गया। मेरी सहेली रोने लगी। मुझे भी डर लग रहा था। मैंने झाड़ियों में से एक लकड़ी निकाली उससे साँप को मारा। वह नीचे गिर पड़ा। फिर हम दोनों तालाब के पास गए। वहाँ हमने पानी पिया और वापिस बस के पास पहुँच गए।

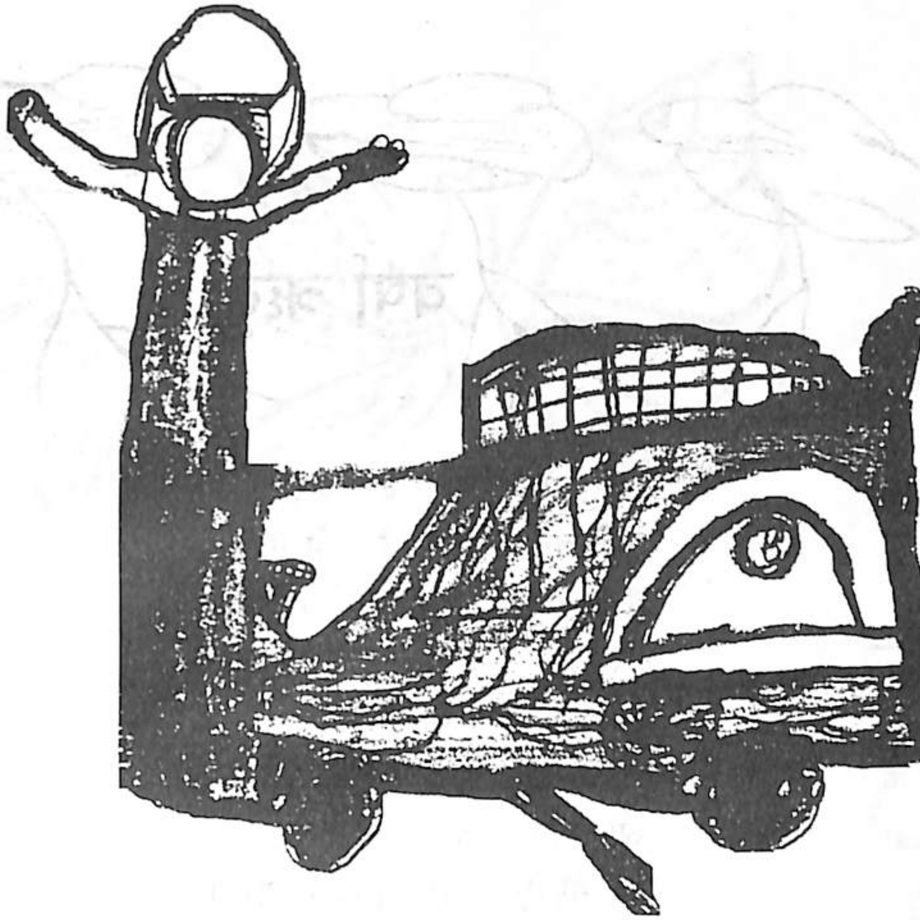
शिनम खान, काजीवाड़ा, धार, म.प्र.



एनी, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.



उज्जैन यात्रा



कुशाग्र सरन, पाँच साल (पता नहीं लिखा है)

मैं एक ज़रूरी काम से उज्जैन जा रहा था। मैं जल्दी तैयार हुआ और स्टेशन की तरफ चल दिया। मेरे वहाँ पहुँचने के कुछ समय बाद ही नागदा–इन्दौर ट्रेन आई। फिर वह आगे जाकर माधवपुर स्टेशन पर रुकी। कुछ समय बाद टी.टी. ने हरी झण्डी दिखाई और ड्राइवर ने ट्रेन बढ़ाई। ट्रेन चलते–चलते अगली स्टेशन कड़छा पहुँची। वह कुछ देर रुकी और उससे आगे चली। चलते–चलते वह विक्रम नगर की तरप चल रही थी। वहाँ एक फाटक पर सामने से एक ट्रेक्टर आ रहा था जो कि लालगाँव का था। फाटक का गेट खुला हुआ था। ट्रेक्टर चालक अपनी धुन में ट्रेक्टर चला रहा था।

रेल ड्राइवर ने बहुत हॉर्न बजाए पर ट्रेक्टर चालक के ऊपर उसका कोई असर नहीं हुआ। रेल चालक की बहुत कोशिश के बाद भी वह ट्रेक्टर ट्रेन के बीच में आ गया और ट्रॉली के छितरे-छितरे उड़ गए। ट्रेक्टर चालक ज़रा सा आगे चला गया था। इसलिए वह बच गया पर वह ट्रेक्टर के मुँह के साथ आगे की ओर घिसता हुआ चला गया। रेल ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। वहाँ पर भीड़ जमा हो गई। कुछ समय बाद पुलिस आई और उस ड्राइवर को हास्पीटल ले गई। फिर ट्रेन चल दी और मैं उज्जैन पहुँच गया।

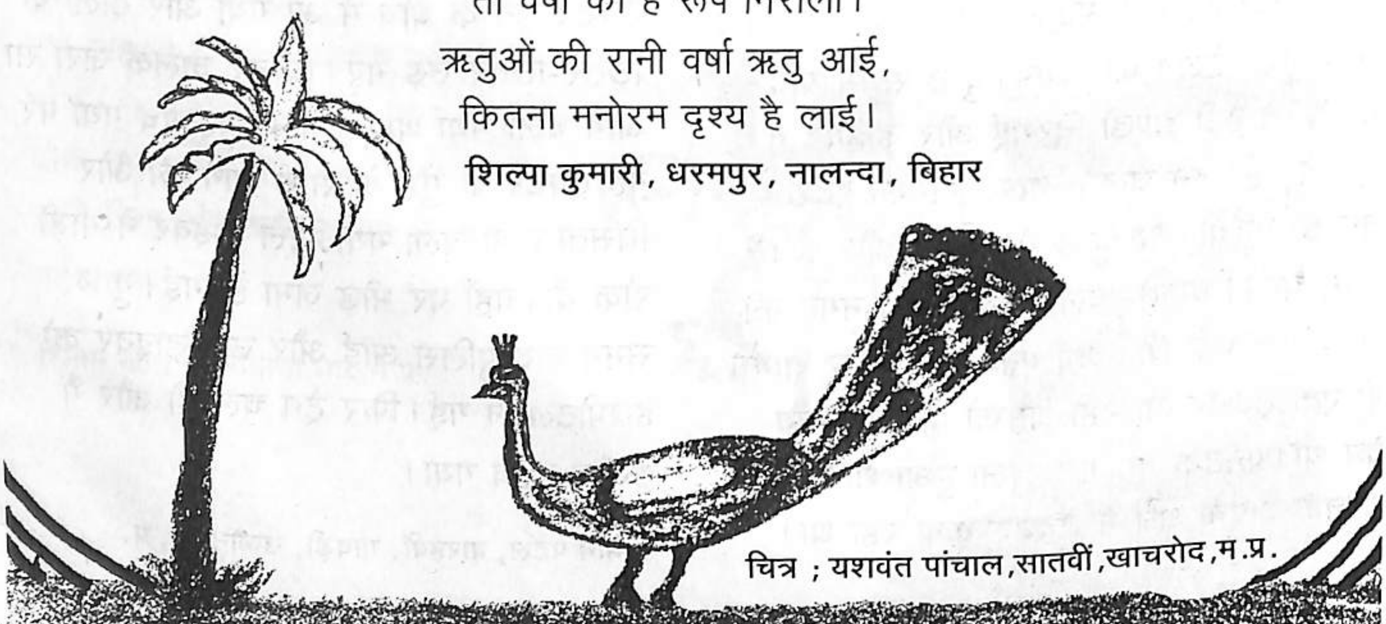
उस्मान पटेल, बारहवीं, गावड़ी, उज्जैन, म. प्र.



वर्षा ऋतु

ऋतुओं की रानी वर्षा ऋतु आई,
कितना मनोरम दृश्य है लाई।
खेतों में देखो फसल की हरियाली,
और शाम में देखो सूरज की लाली।
कहीं लगी फूलों की लड़ी,
तो कहीं लगी है बूँदा-बाँदी की झड़ी।
आसमान में देख बादल उमड़ते,
मोर भी देखो झूम-झूमकर नाचते।
कहीं बिजली कड़की कड़-कड़,
कहीं बादल गरजे गड़-गड़।
देख बादल को नदी भी उमड़े,
कल-कल करती आई झट से।
बादलों की है अदा निराली,
तो वर्षा की है रूप निराली।
ऋतुओं की रानी वर्षा ऋतु आई,
कितना मनोरम दृश्य है लाई।

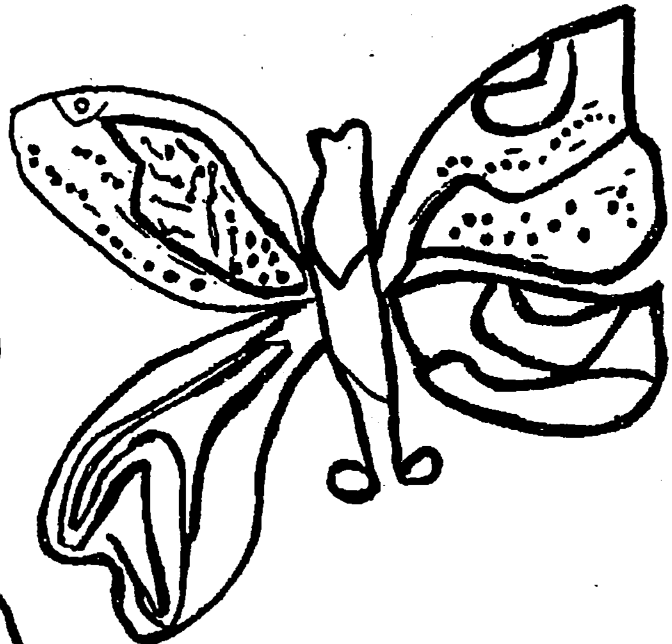
शिल्पा कुमारी, धरमपुर, नालन्दा, बिहार

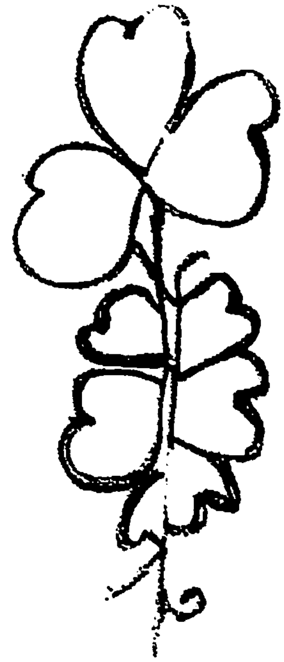


चित्र ; यशवंत पांचाल, सातवीं, खाचरोद, म.प्र.









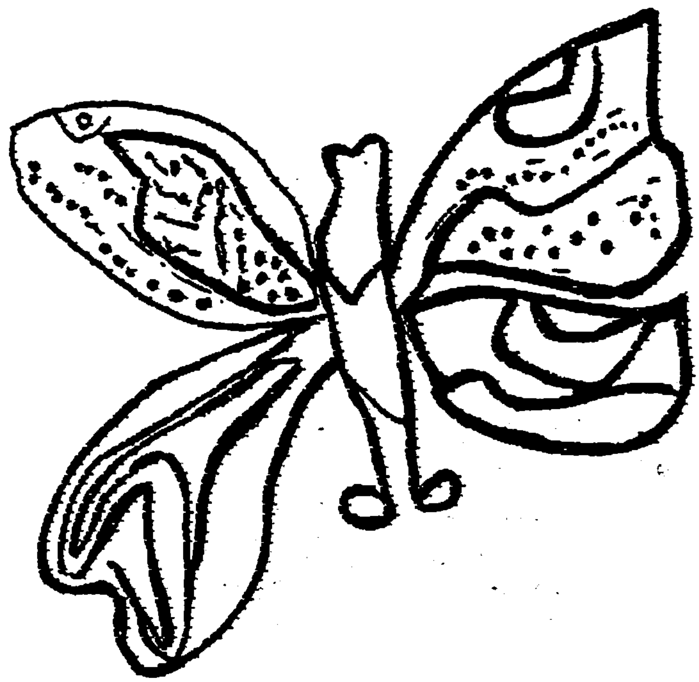
सिनेमा

जब मैं सिनेमाघर पहली बार गया तो मुझे विचित्र लगा। इतने सारे लोग एक बड़े हॉल में। और टी.वी. के सामने एक बड़ा पर्दा जिसमें फ़िल्म के हीरो-विलेन बड़े-बड़े। वो ऐसे दिखते थे जैसे अपने सामने नाच रहे हों, या लड़ाई हो रही हो। मेरे साथ मेरा मित्र भी था। उसे और मुझे बहुत मज़े आ रहे थे।

जब फिल्म पाँच मिनट के लिए रुकी तो मैं और मेरा मित्र सिनेमाघर के बाहर आए। बाहर खाने-पीने का बहुत सामान था। हमने उसमें से बहुत सी चीज़ें खरीदीं। फिर जब पाँच मिनट खत्म हो गया तो हम फिल्म देखने अन्दर गए। फिल्म में बहुत मज़े आ रहे थे। हम जो खाने की चीज़ें बाहर से लाए थे वो हम सबने मिल जुलकर खाईं।

फिल्म में जब एक व्यक्ति ने अपनी माँ की हत्या कर दी, वह भी इसलिए कि उसे पाँच लाख की ज़रूरत थी तो हमें बहुत बुरा लगा। फिल्म समाप्त होते ही हम अपने घर चले गए।

महेन्द्र चौधरी, सातवीं, देवास, म.प्र.



सभी चित्र ; सीपी धनंजय,भोपाल,म.प्र.

मोर ही मोर . . .



यशवन्त,सरस्वती शिशु मंदिर,खाचरोद,म.प्र.



कुतुबउद्दीन,नवमीं,खाचरोद,म.प्र.



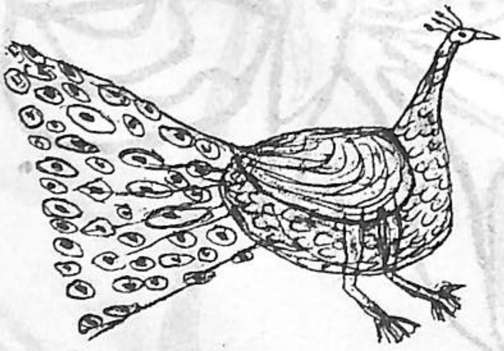
नाम नहीं लिखा है



नाम नहीं लिखा है



राधा,वैकल्पिक शाला, दग्धा



राखी,आँजनवाड़ा,झाबुआ,म.प्र.



डनलॉप जी का टायर

स्निग्धा मित्रा

बात बहुत पुरानी है। सन् 1887 की। एक बहुत दूर के देश – आयरलैण्ड के बेलफास्ट नामक शहर में एक किस्सा हुआ। यह किस्सा साइकिल से ताल्लुक रखता है। वही साइकिल जो तुम चलाते हो।

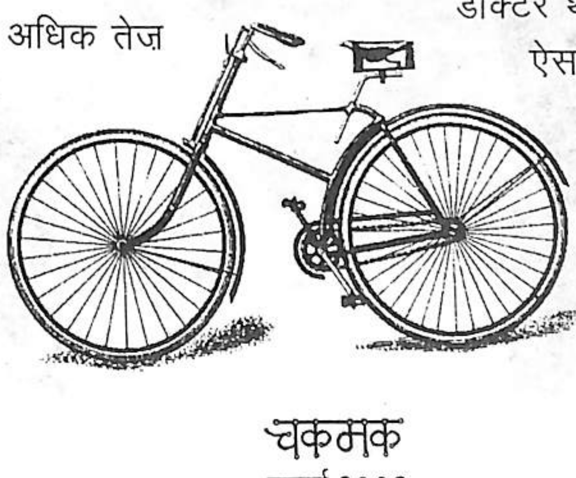
उस ज़माने में साइकिल कुछ अजब तरह की होती थी। उसमें आगे एक पहिया और पीछे दो छोटे-छोटे पहिए हुआ करते थे। वैसी ही जैसी आजकल बच्चों की तिपहिया साइकिल होती है। सोचो, कैसा मज़ेदार नज़ारा होता होगा! जब बड़े-बूढ़े लोग तिपहिया साइकिल की सवारी करते घूमते होंगे!

खैर, उन दिनों साइकिल के पहिए भी धातु के बने होते थे। साइकिल उन दिनों विलासिता या आराम-तलबी का सामान कही जाती थी। फिर साइकिल की बनावट, उसके पहिए आदि ऐसे थे कि साइकिल तेज़ चलाने का मतलब अपनी टाँग तुड़वाना ही होता था! इस सबके बावजूद लोग साइकिल रेस का आयोजन भी करते थे। पर वे इन मुकाबलों में भी साइकिल अधिक तेज़ नहीं चला पाते थे। और इतनी तेज़ चलाने पर जो खस्ता हालत होती थी, वह अलग। इसीलिए इस खेल को लोग 'बोन शेकर' या 'हड्डी तक झकझोर देने वाला खेल' के नाम से जानते थे।

एक बार की बात है। ऐसा ही एक आयोजन एक स्कूल में होने वाला था। इसी



स्कूल का एक छात्र इस मुकाबले में भाग लेने वाला था। वह बड़ा ही खुश था। साइकिल दौड़ के एक दिन पहले वह सोच रहा था कितना अच्छा हो अगर उसकी साइकिल में कुछ ऐसी तब्दीली हो जाए जिससे साइकिल चलाना कुछ आसान हो जाए। उसके पिता जानवरों के डॉक्टर थे। वह भी चाहते थे कि कुछ ऐसा हो जाए, मगर जानवरों का डॉक्टर भला साइकिल में क्या सुधार करे!



बच्चे की माँ को भी अगले दिन होने वाली



...जब भी होज पाईप पानी से भर जाता है तो फूल जाता है। इसे हवा भरकर भी इसी तरह फुलाया जा सकता है। उन्होंने तुरन्त साइकिल के पहिए की गोलाई नापी। और होज पाईप के उतने ही बड़े टुकड़े काट लिए। अब पाईप के एक सिरे को दबाया और दूसरे सिरे से हवा भरी। पाईप फूल गया था। उन्हें लगा इससे साइकिल के जर्क(धक्कों) को कम किया जा सकता है। फिर क्या था..उन्होने एक पिछली धातुई छड़ के ऊपर रबर पाईप को लपेट दिया। फिर उसमें हवा भरी। जब देखा कि रबर का छल्ला हवा के दबाव से कड़क हो गया है तब इस रबर के पाईप के दोनों सिरों को सील कर दिया। अब इस छड़ (जिस पर पाईप कसा हुआ था) को पिछले पहिए पर केनवास से कसकर बाँध दिया। पाईप इतना बड़ा न था कि अगले पहिए में भी ऐसी व्यवस्था हो सके। पिछले दोनों पहियों पर पाईप कसने के बाद डनलॉप



दौड़ की चिन्ता थी। उसे डर था कि कहीं उसका बेटा इस दौड़ में अपने हाथ पाँव न तुड़ा बैठे। अब जब डॉक्टर की पत्नी ने भी साइकिल में सुधार की बात कही तो वे सोच में पड़ गए। शाम को वह बगीचे में बैठे चाय पी रहे थे कि उनकी नज़र बगीचे में पड़े एक होज पाईप पर गई। उनके मन में विचार आया

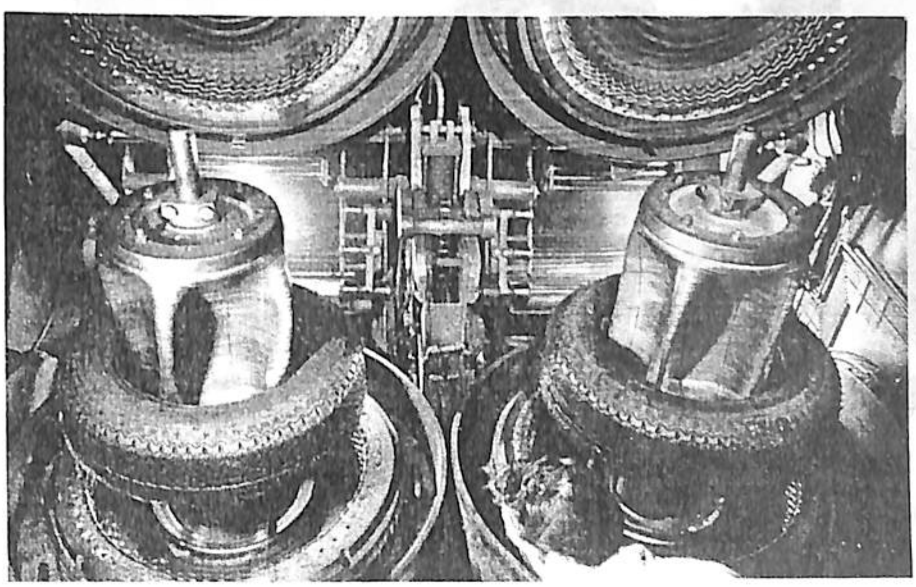






महोदय साइकिल को जाँचने निकले। साइकिल पहले की अपेक्षा काफी आसानी से चल रही थी। न तो दचके लग रहे थे न खींचने में ही इतनी मशक्कत हो रही थी। अगले दिन दौड़ हुई और उनके बेटे की साइकिल दौड़ में काफी आगे रही। हवा के चक्कों वाली इस साइकिल की खबर शहर भर में फैल गई । दौड़ की शाम से ही डनलॉप के घर साइकिलों का ढेर लग गया। सभी अपनी साइकिल में पाईप का बना वैसा ही टायर लगवाना चाहते थे। डनलॉप भी शाम को अस्पताल से आने के बाद इस काम में जुट गए। आयरलैण्ड के बेलफास्ट शहर के लोग इस टायर को न्यूमेटिक टायर कहने लगे। डनलॉप इस काम के लिए शहर में मशहूर हो गए। वहाँ के एक अमीर विलियम हार्वे ने डनलॉप की इस खोज को सराहा और इसे पेटेण्ट करने की इच्छा व्यक्त की।

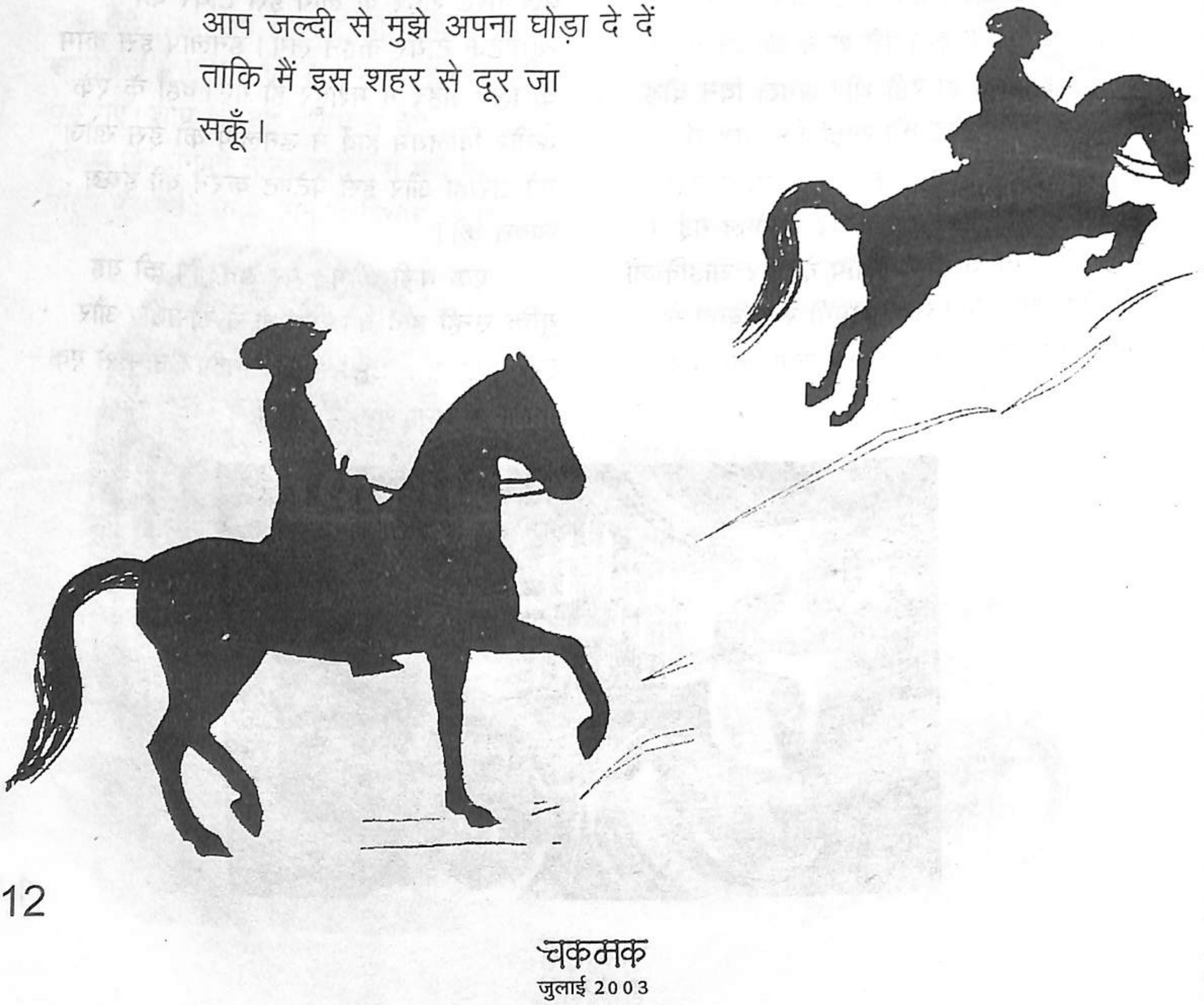
एक बड़ी कीमत पर डनलॉप की यह युक्ति उन्हीं हार्वे की कम्पनी ने खरीदी। और इस तरह सन 1887 से डनलॉप नाम से एक टायर कम्पनी शुरू हो गई।



मौत कथा

बगदाद के एक व्यापारी ने अपने नौकर को कुछ सामान लेने बाज़ार भेजा। घड़ी की सुइयाँ कुछ ही आगे बढ़ी थीं कि नौकर लौटा.... उसका चेहरा सफेद झक हो रहा था... और वह थरथर काँप रहा था।

''मालिक अभी अभी जब मैं बाज़ार में था, मुझे भीड़ में एक महिला ने धक्का दिया। मैं मुड़ाऔर देखता हूँ कि सामने मौत खड़ी है। उसने मुझे देखा और धमकाने वाले हावभाव बनाए...... तो मालिक आप जल्दी से मुझे अपना घोड़ा दे दें ताकि मैं इस शहर से दूर जा सकूँ।





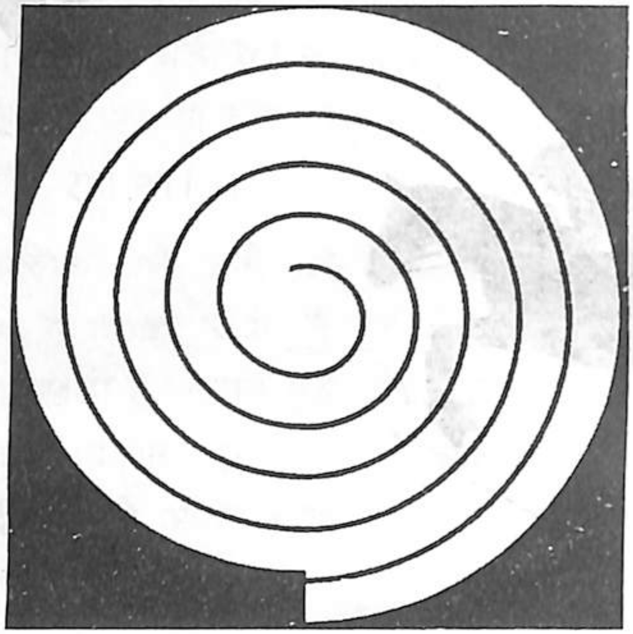
मुझे अपनी नियति को टालना ही होगा। मैं सँभारा चला जाऊँगा। वहाँ मुझे मौत नहीं ढूँढ पाएगी।''

व्यापारी ने उसे अपना घोड़ा दे दिया। नौकर बिना देर किए उस पर चढ़ा और हवा हो गया।

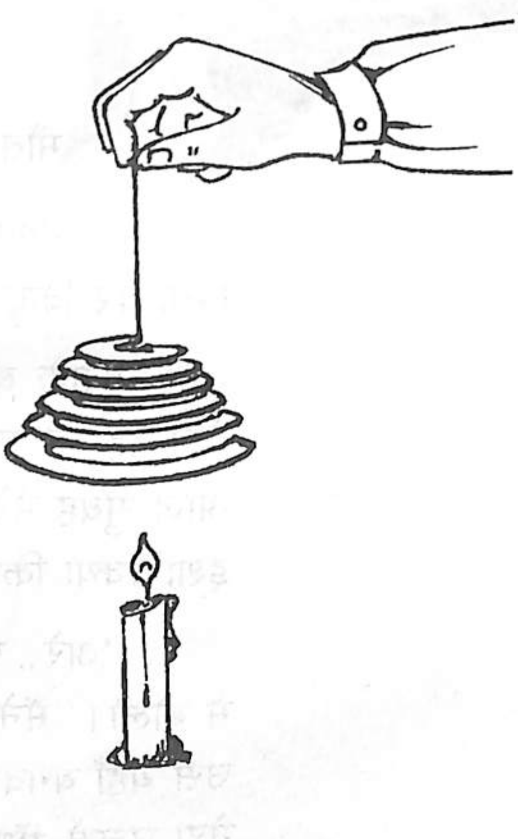
इसके बाद मालिक बाज़ार गया। मुझे भीड़ में खड़ा देख वह मेरे पास आया और बोला, ''क्यों मेडम तुमने आज सुबह मेरे नौकर की तरफ धमकाने डराने वाले इशारे क्यों किए?''

''अरे.. पर वे तो कोई डराने वाले इशारे नहीं थे!'' मैं बोली। ''मैंने तो महज़ आश्चर्य ज़ाहिर किया था। मैं तो उसे यहाँ बगदाद में देखकर हैरान थी क्योंकि आज रात मेरा उससे सँभारा में मिलना तय है।''

कुण्डली कैसे घूमी?



मोटे कागज़ (कार्ड शीट) का 10 वर्ग सेण्टीमीटर का एक टुकड़ा लो। इसके बीचोंबीच एक छोटा-सा छेद कर लो। इस छेद के आसपास चित्र में दिखाए गए तरीके से कुण्डली बना लो। चाहो तो तुम इसके लिए परकार की मदद भी ले सकते हो। कैंची से कागज़ को रेखाओं पर से सावधानी से काट लो। एक धागा बीच के छेद से पिरोकर एक तरफ गठान लगा लो। अब चित्र में दिखाए तरीके से धागे का दूसरा सिरा पकड़कर उठाने पर कागज़ की कुण्डली जैसी रचना मिलेगी। इस कुण्डली को एक जलती हुई मोमबत्ती या लैंप के ऊपर लटकाओ। ध्यान रखना कि यह आग न पकड़ने पाए।

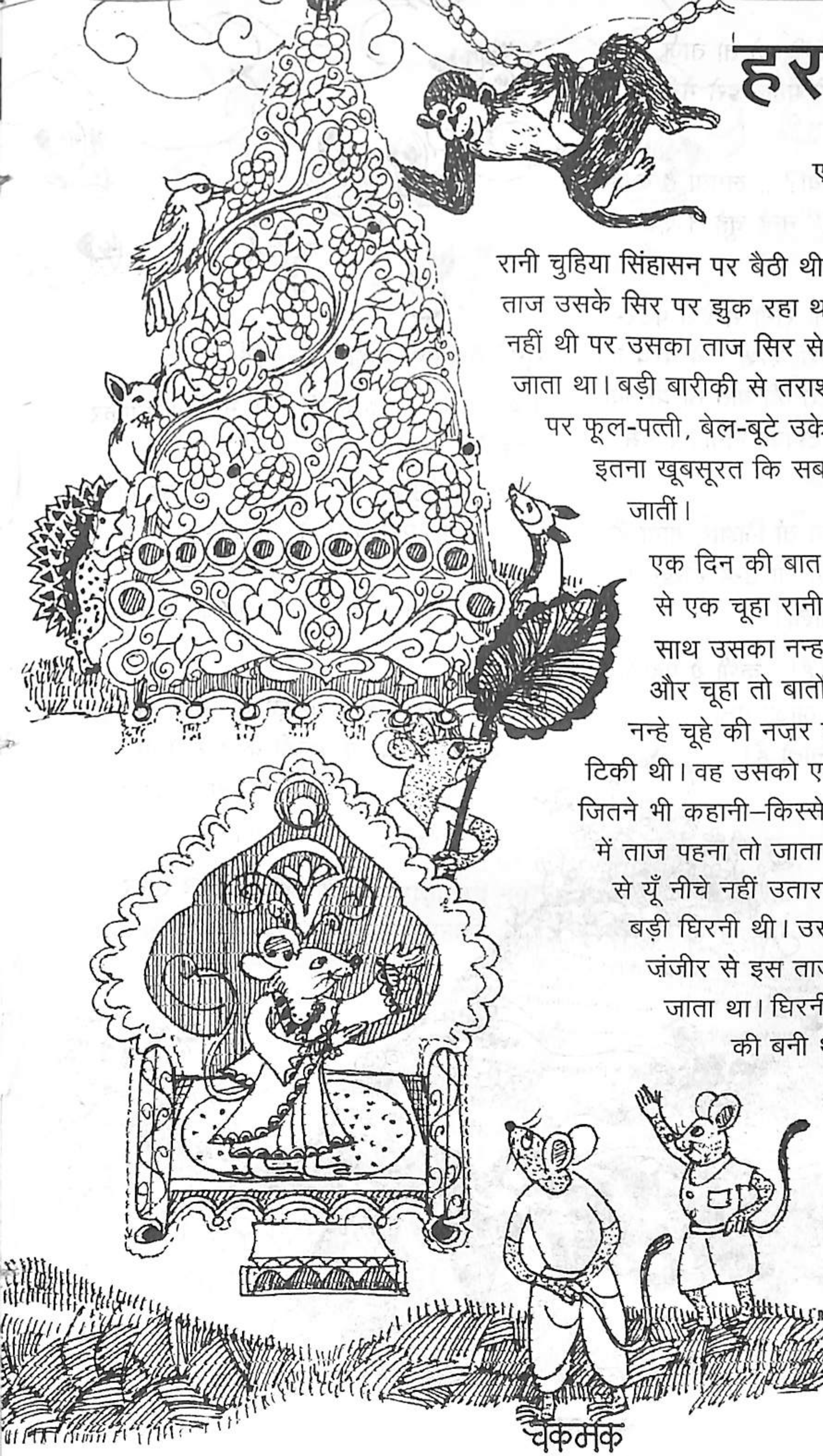


देखो क्या होता है ?

तुम्हें क्या लगता है ऐसा क्यों हुआ?

हरा ताज

एच.एस. राधा



रानी चुहिया सिंहासन पर बैठी थी। एक खूबसूरत-सा हरा ताज उसके सिर पर झुक रहा था। चुहिया बहुत बड़ी नहीं थी पर उसका ताज सिर से छत की ऊँचाई तक जाता था। बड़ी बारीकी से तराशा हुआ था वह! हरे रंग पर फूल-पत्ती, बेल-बूटे उकेरे गए थे। ताज था ही इतना खूबसूरत कि सबकी निगाहें उस पर जम जातीं।

एक दिन की बात है। किसी ज़रूरी काम से एक चूहा रानी से मिलने आया। उसके साथ उसका नन्हा बच्चा भी था। रानी और चूहा तो बातों में मशगूल हो गए। पर नन्हे चूहे की नज़र सुन्दर हरे ताज पर टिकी थी। वह उसको एकटक निहार रहा था। जितने भी कहानी–किस्से उसने पढ़े थे, उन सब में ताज पहना तो जाता था, पर उसे कभी छत से यूँ नीचे नहीं उतारा जाता था। यहाँ तो एक बड़ी घिरनी थी। उस पर एक बड़ी-सी जंजीर से इस ताज को ऊपर नीचे किया जाता था। घिरनी और जंजीर दोनों सोने की बनी थीं।

चूहे का काम हो गया था। वह जाने ही वाला था। इतने में नन्हा चूहा रानी से बोला, ''आप इतना बड़ा ताज क्यों पहनती हैं?''

रानी बोली, ''अरे भाई रानी को तो ताज पहनना ही होता है! मुझसे पहले इसे मेरी माँ पहनती थी।''



''पर इतना बड़ा ताज क्यों? ....लगता है कोई पहाड़ी ही पहन रखी हो!'' नन्हे चूहे ने एक और सवाल किया।

पिता हैरान थे। कोई भला रानी से ऐसे पटर-पटर बात करता है? ''श्श, श्श्श,'' वे बच्चे को चुप करा रहे थे। पर हैरत की बात तो यह कि रानी तो इस सवाल पर ठहाका लगाकर हँस पड़ी।

''अरे रहने दो..! बच्चों को तो जिज्ञासु होना ही चाहिए! यही तो वो चीज़ है जो उन्हें सीखने में मदद करती है।'' रानी बोली।

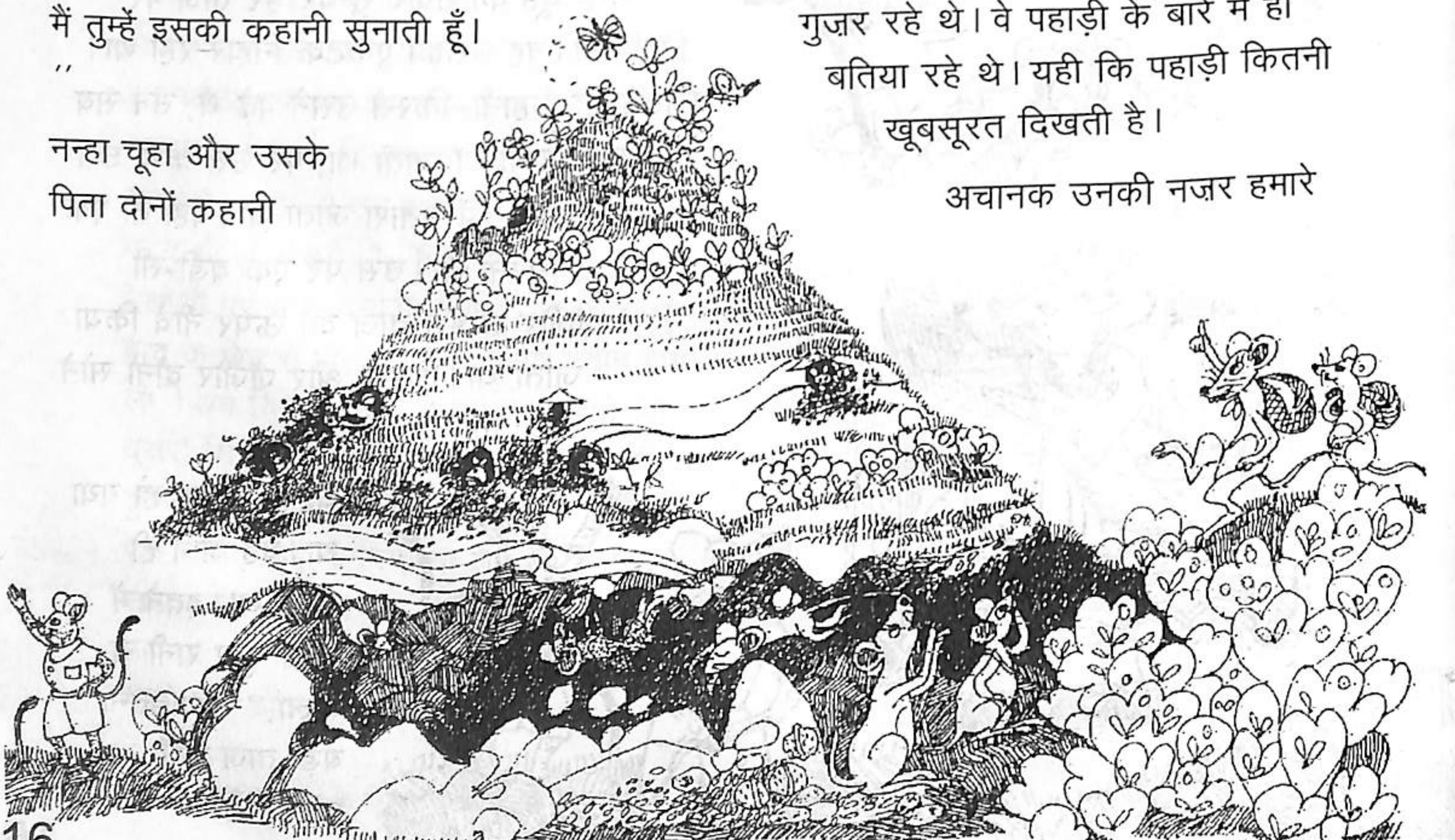
''सच, मैं पहाड़ी ही पहने हूँ! ...कभी ये पहाड़ी ही हुआ करती थी। चलो आओ बैठो, मैं तुम्हें इसकी कहानी सुनाती हूँ।''

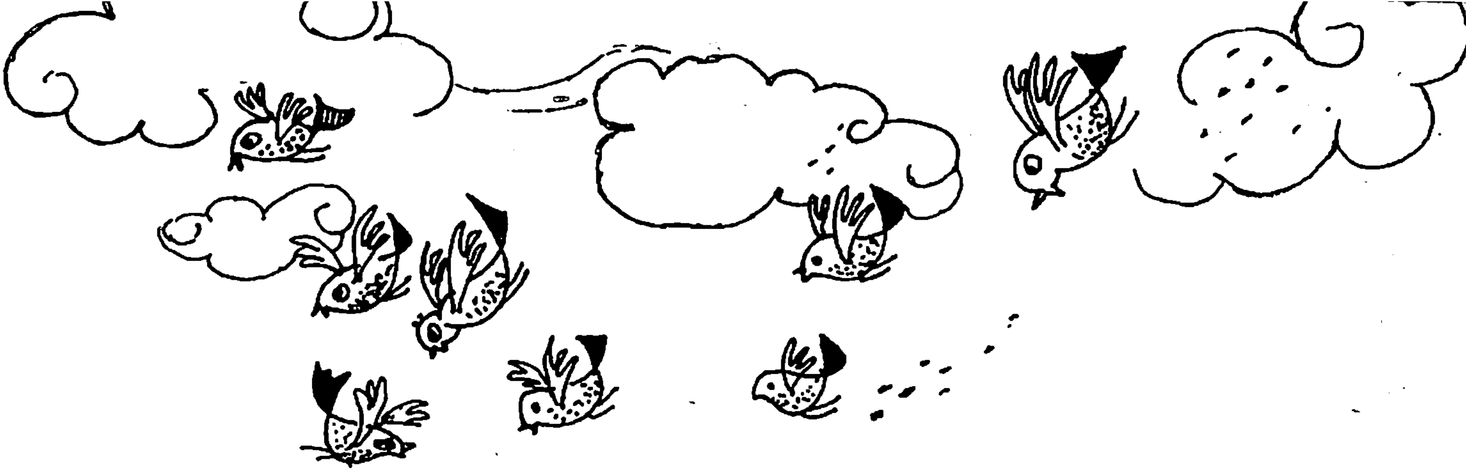
नन्हा चूहा और उसके पिता दोनों कहानी सुनने बैठ गए। कहानी शुरु हुई।

कभी हम इसी पहाड़ी की तली में बिल बनाकर रहते थे। यह मेरी माँ के ज़माने की बात है। पहाड़ी खूब ऊँची और बड़ी ही खूबसूरत सी थी। पूरी की पूरी घास से ढकी हुई। दूर से देखने पर यह हरी-भरी और बहुत खूबसूरत लगती। तब हममें यानी चूहों और पहाड़ी में खूब छनती थी।

एक दफा कुछ पक्षी पहाड़ी के ऊपर से गुज़र रहे थे। वे पहाड़ी के बारे में ही बतिया रहे थे। यही कि पहाड़ी कितनी खूबसूरत दिखती है।

अचानक उनकी नज़र हमारे





बिलों पर गई। बिलों के बाहर की मिट्टी को देखकर उनमें से किसी ने कहा, 'इन बिलों के कारण पहाड़ी की सुन्दरता कुछ कम हो गई है।' यह बात पहाड़ी के कानों में पड़ी। वह कई दिनों तक यह बात गुनती रही।

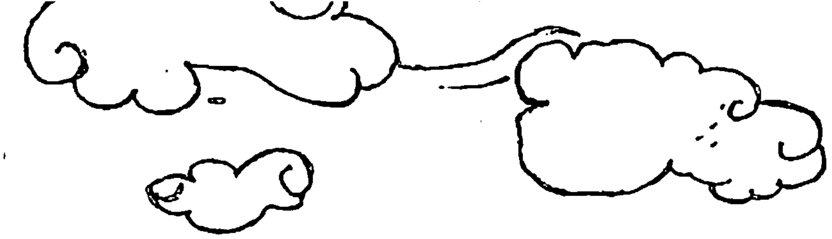
"एक दिन पहाड़ी ने बिल भरने शुरू कर दिए। चूहों ने मिन्नते कीं। कई नन्हे नन्हे चूहे दब गए। पहाड़ी अब इतनी सख्त हो गई कि नए बिल बनाना मुश्किल काम था। तब रानी चुहिया पहाड़ी के पास गई, गिड़गिड़ाई। उसने उससे नन्हे चूहों को बचाने की गुहार की। पर पहाड़ी का मन न बदला तो न ही बदला। रानी ने करार भी किया कि अगर पहाड़ी उन नन्हे चूहों की जान बख्श दे तो वे सब पहाड़ी छोड़कर कहीं और चले जाएँगे।

पहाड़ी गूँगी बनी रही। रिश्तों में खटास आ गई।

"धीरे-धीरे चूहों के काफिले कहीं और बसने लगे। ...नए बिल खोदे गए .....नए घर बनने लगे। लेकिन वे पहाड़ी को नहीं भूले। गाँठ बाँध ली पहाड़ी को सबक तो ज़रूर सिखाएँगे।

"काफी दिन बीत गए। फिर एक रात आसपास के सब चूहे जमा हुए। घुप्प अँधेरा था। पहाड़ी ऊँघ रही थी। थोड़ी ही देर में चूहे पूरी पहाड़ी पर फैल गए। जैसे एक बड़ा राक्षस पहाड़ी पर छा गया हो। पहाड़ी अब पहले जितनी सख्त तो थी नहीं। सब के सब चूहे पूरी ताकत से पहाड़ी को खोदने में जुट गए। इससे पहले कि पहाड़ी को होश आता चूहों का काफिला उसे खोखला कर चुका था। इस पहाड़ी पर



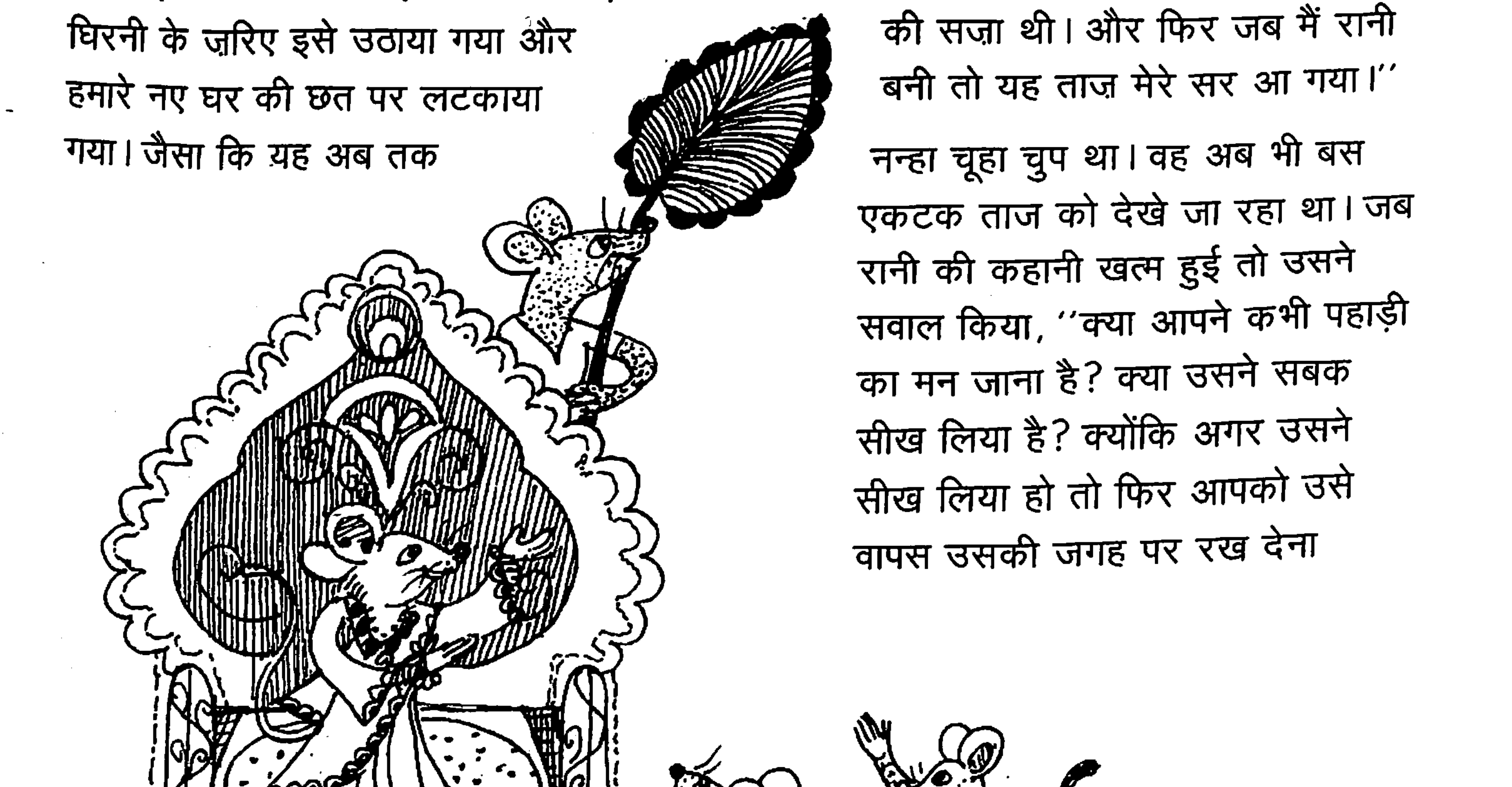


उन्होंने नक्काशी की। फूल-पत्ते, बेल-बूटे तराशे! खुदाई से निकली मिट्टी को उन्होंने ढोकर दूर हटा दिया।

''चूहों ने यह सब किया ही इतनी फुर्ती से था कि पहाड़ी कुछ भी नहीं कर पाई। जल्दी ही चूहों ने पहाड़ी को ज़मीन से भी अलग-थलग कर दिया। फिर वे इस पहाड़ी को रानी यानी मेरी माँ के पास ले गए। पहाड़ी की चोटी पर एक बड़ी ज़ंजीर बाँधी गई। फिर एक बड़ी घिरनी के ज़रिए इसे उठाया गया और हमारे नए घर की छत पर लटकाया गया। जैसा कि यह अब तक है। इसी ताज के नीचे रानी चुहिया की सिंहासन है। रानी चुहिया इसी सिंहासन पर बैठती है। और यह ताज उसके सिर पर लटकता रहता है।

''इस ताज की नक्काशी लाजवाब है। आसपास जहाँ जहाँ ये खबर हुई, वहाँ वहाँ के जानवर इसे देखने आए। देखो अब तो पहाड़ी पहले से भी खूबसूरत नज़र आने लगी है। पर अब वह पहाड़ी रही कहाँ? खैर! यह तो पहाड़ी की सज़ा थी। और फिर जब मैं रानी बनी तो यह ताज़ मेरे सर आ गया।''

नन्हा चूहा चुप था। वह अब भी बस एकटक ताज को देखे जा रहा था। जब रानी की कहानी खत्म हुई तो उसने सवाल किया, ''क्या आपने कभी पहाड़ी का मन जाना है? क्या उसने सबक सीख लिया है? क्योंकि अगर उसने सीख लिया हो तो फिर आपको उसे वापस उसकी जगह पर रख देना



क्या लगता है? क्या ज़्यादा ज़रूरी है, सुन्दरता या आपसी रिश्ते ? सुन्दर तो तुम आज भी हो। बल्कि पहले से भी ज़्यादा सुन्दर हो। पर अब तो तुम पहाड़ी ही नहीं रहीं।''

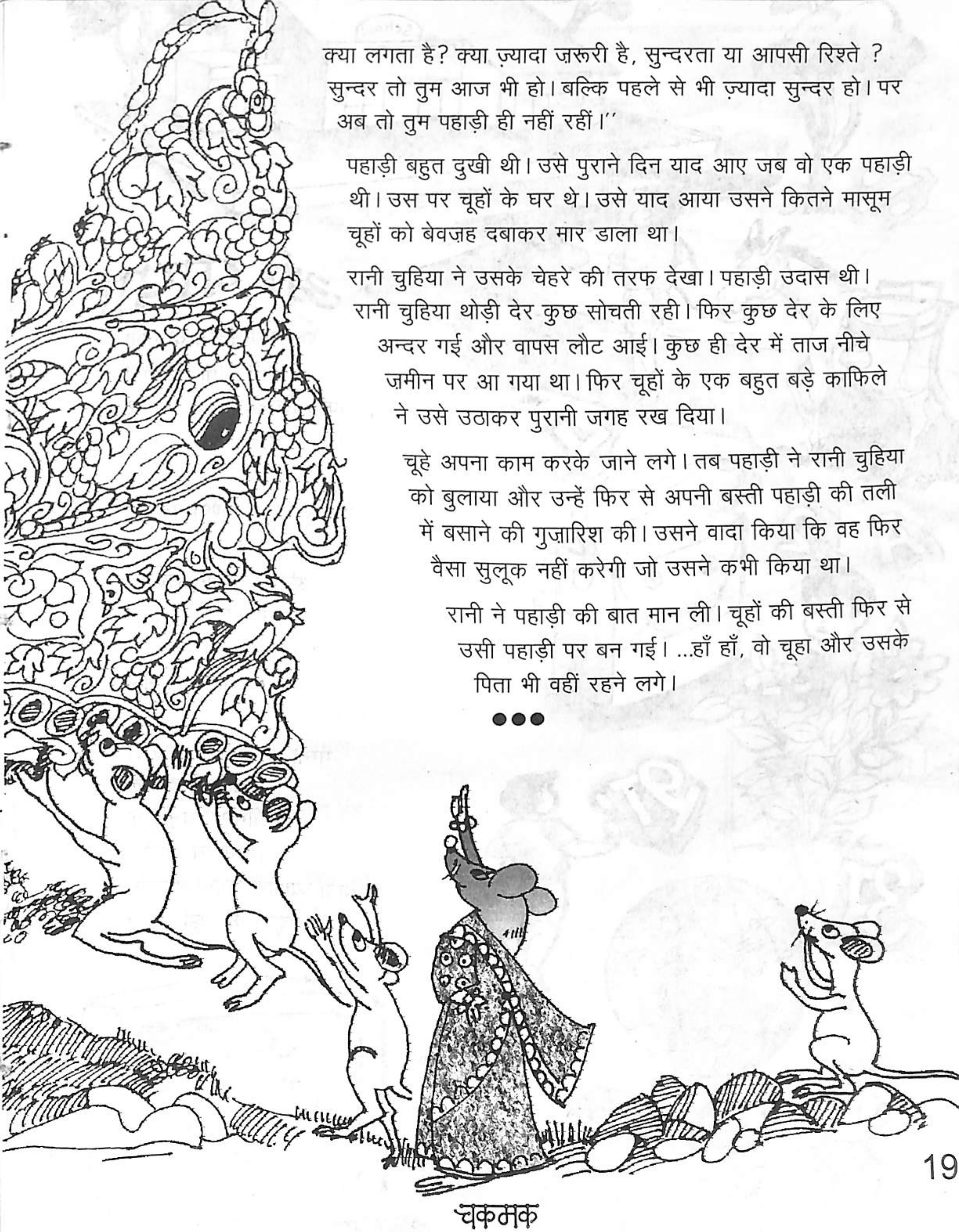
पहाड़ी बहुत दुखी थी। उसे पुराने दिन याद आए जब वो एक पहाड़ी थी। उस पर चूहों के घर थे। उसे याद आया उसने कितने मासूम चूहों को बेवज़ह दबाकर मार डाला था।

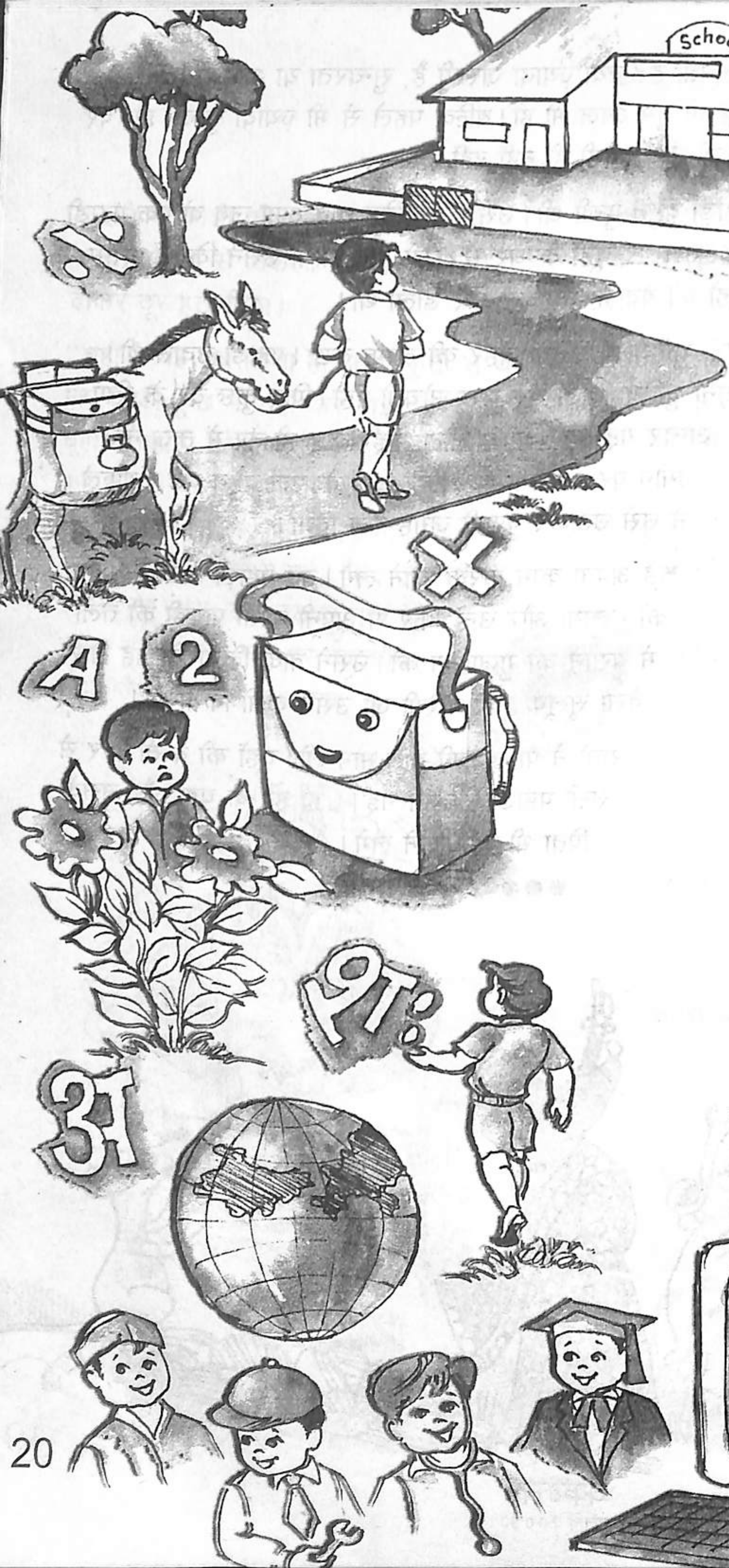
रानी चुहिया ने उसके चेहरे की तरफ देखा। पहाड़ी उदास थी। रानी चुहिया थोड़ी देर कुछ सोचती रही। फिर कुछ देर के लिए अन्दर गई और वापस लौट आई। कुछ ही देर में ताज नीचे ज़मीन पर आ गया था। फिर चूहों के एक बहुत बड़े काफिले ने उसे उठाकर पुरानी जगह रख दिया।

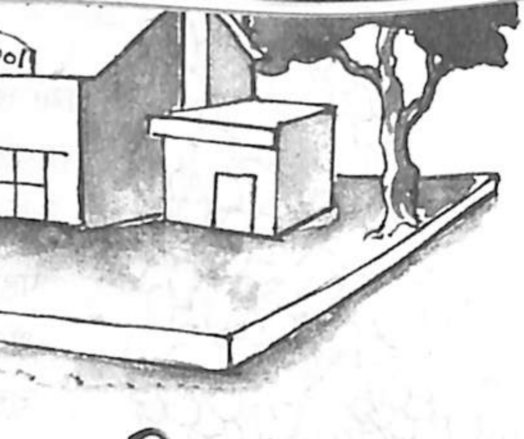
चूहे अपना काम करके जाने लगे। तब पहाड़ी ने रानी चुहिया को बुलाया और उन्हें फिर से अपनी बस्ती पहाड़ी की तली में बसाने की गुज़ारिश की। उसने वादा किया कि वह फिर वैसा सुलूक नहीं करेगी जो उसने कभी किया था।

रानी ने पहाड़ी की बात मान ली। चूहों की बस्ती फिर से उसी पहाड़ी पर बन गई। ...हाँ हाँ, वो चूहा और उसके पिता भी वहीं रहने लगे।

●●●





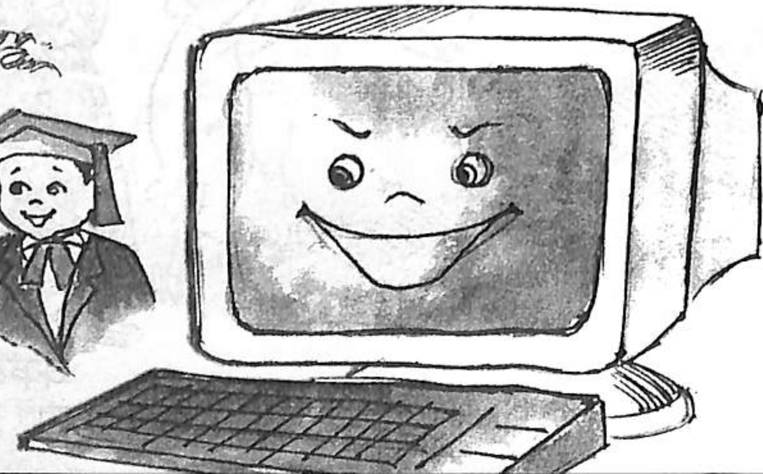


ओ पापा।

एक गधा दिला दो पापा
मुझको जाना है स्कूल.
पाँच किलो का बस्ता और
मैं ढाई बरस का फूल

हिन्दी पढ़ लूँ गणित पढ़ा दो
और रटूँ भूगोल
अँग्रेज़ी विज्ञान संस्कृत
कमर खा रही झोल
कम्प्यूटर है बना भाग्य के
दरवाज़े की चूल

मम्मी कहती बनो डाक्टर
दादी कहे वकील
इन्जीनीयर बनूँ ऐसी
तुम करते अपील
दादा व्यापारी बनना बतलाते
कुल का यही उसूल

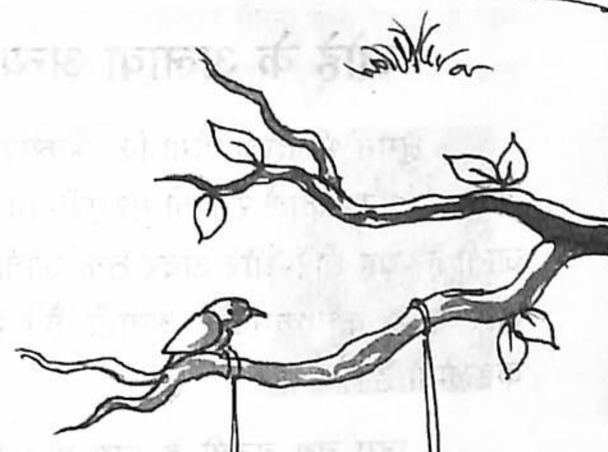




मन तो करता मैं भी खेलूँ
कूदूँ नाचूँ गाऊँ
दबी कापियों के ढेरों में
गरदन घुमा न पाऊँ
कभी कल्पना में भी झूला
नहीं सकूँ मैं झूल

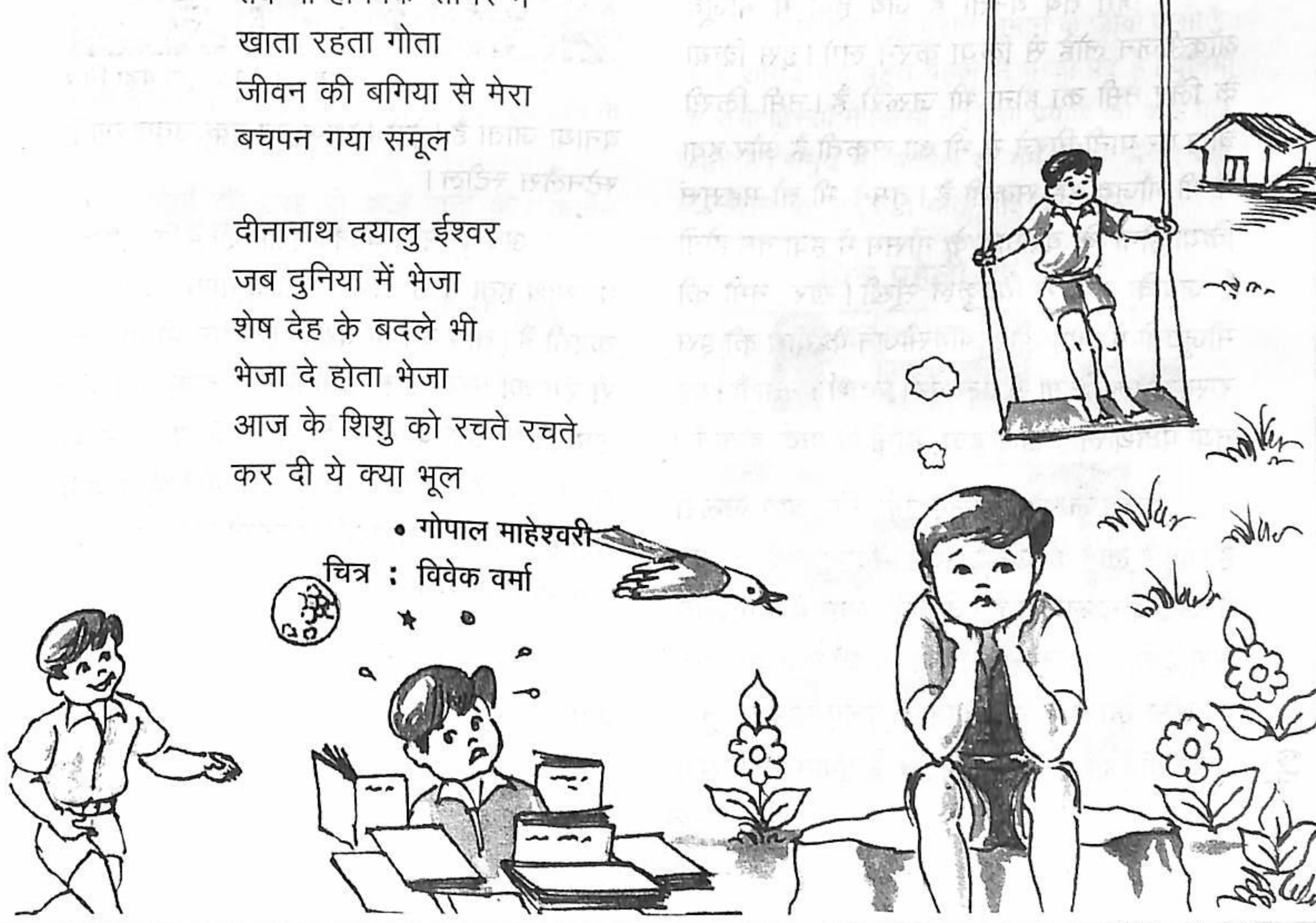
एक सण्डे आता जब
स्कूल जाना नहीं है होता
तब भी होमवर्क सागर में
खाता रहता गोता
जीवन की बगिया से मेरा
बचपन गया समूल

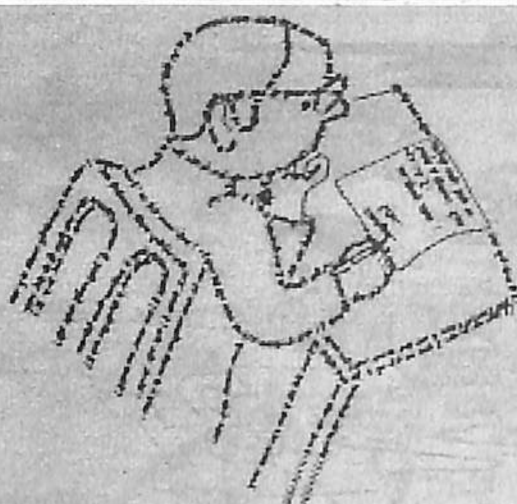
दीनानाथ दयालु ईश्वर
जब दुनिया में भेजा
शेष देह के बदले भी
भेजा दे होता भेजा
आज के शिशु को रचते रचते
कर दी ये क्या भूल



• गोपाल माहेश्वरी

चित्र : विवेक वर्मा





सवालीराम

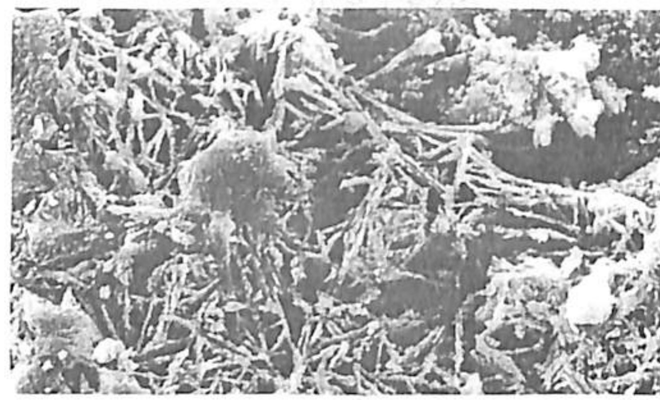
ये हैं सवालीराम। मज़ाक नहीं, इनका नाम वाकई सवालीराम ही है! और इनका काम है लोगों के तरह-तरह के सवालों के जवाब ढूँढ-ढूँढकर बताना। बच्चों के सवालों का जवाब ढूँढने में इन्हें और भी मज़ा आता है। तो अब तुम सब इनसे अपने मन में कुलबुलाने वाले सवाल पूछना शुरू कर दो।

जंग क्या होती है?
लोहे के अलावा अन्य धातुओं पर जंग क्यों नहीं लगती है?

तुमने भी देखा होगा कि अक्सर लोहे की सतह पर भूरा -काले रंग की भुरभुरी-सी परत जम जाती है। यह धीरे-धीरे अंदर तक जाती रहती है और लोहे को कमज़ोर बनाती है। यही जंग कहलाती है।

जंग तब बनती है जब हवा में मौजूद ऑक्सीजन लोहे से क्रिया करने लगे। इस क्रिया के लिए नमी का होना भी ज़रूरी है। नमी किसी चीज़ पर पानी गिरने से भी आ सकती है और हवा में भी मौजूद रह सकती है। तुमने भी तो महसूस किया होगा कि बरसात के मौसम में हवा नम होती है जबकि गर्मी में बिल्कुल सूखी। खैर, नमी की मौजूदगी में लोहे और ऑक्सीजन के बीच की इस रासायनिक क्रिया से एक नया पदार्थ बनता है। यह नया पदार्थ लोहे और हवा, दोनों से फर्क होता है।

जंग लगने के लिए एक और बात ज़रूरी है। वह है लोहे का अशुद्ध होना। बिल्कुल शुद्ध लोहे में जंग कम लगती है। क्योंकि लोहे में उपस्थित अशुद्धियाँ जंग लगने की प्रक्रिया को तेज़ कर देती हैं। लोहे को जंग से बचाने के लिए उसका कुछ अन्य धातुओं के साथ विशेष अनुपात में मिश्रण



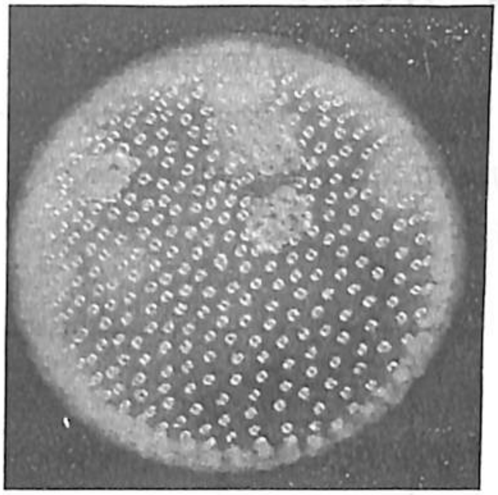
जंग का 825 गुना बड़ा चित्र

बनाया जाता है। ऐसे मिश्रण का एक उदाहरण है स्टेनलैस स्टील।

अब दूसरा सवाल। ऐसा नहीं है कि धातुओं के साथ हवा में उपस्थित गैसें व वाष्प क्रिया नहीं करती हैं। ताँबे को ही देखो। इस पर भी तो हरे-से रंग की परत जम जाती है। यह वाष्प व कार्बन डायऑक्साइड के ताँबे के साथ क्रिया करने से बनती है। इसमें और जंग लगने में कोई बहुत फर्क नहीं है। पर अन्य धातुओं पर जमने वाली परत को जंग नहीं कहते हैं।

हाँ, कई धातुएँ ऐसी भी हैं जिन पर वातावरण•का लगभग कोई प्रभाव नहीं होता।

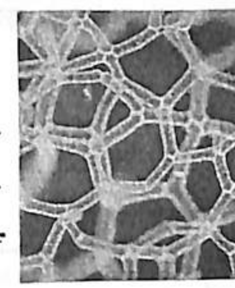
काई क्या है?



जहाँ भी पानी कुछ दिन तक रुका रहता है, वहाँ पर एक हरी परत-सी दिखने लगती है। घर की दीवार पर, तालाब के किनारे, गड्ढों में औरकई जगहों पर यह देखी जा सकती है ।आजकल बरसात के मौसम में तो पत्थरों पर और पेड़ों की छाल तक पर यह परत आ सकती है।

यह हरापन एक प्रकार के पौधे के कारण होता है। ये पौधे काई कहलाते हैं। काई कई प्रकार की होती है। काई में सामान्य पौधों की तरह जड़–पत्ती–तना आदि नहीं होते हैं। फिर भी पौधों के कई गुण होने के कारण इन्हें पौधा माना जाता है।

पौधों की तरह ही काई पानी और कार्बन डायऑक्साइड का इस्तेमाल कर सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में अपना भोजन बनाते हैं। आकार में ये इतने छोटे होते हैं कि इन्हें सूक्ष्मदर्शी की मदद से ही देखा जा सकता है। तालाब में पानी की सतह पर जो काई दिखाई देती है, वह एक पौधा नहीं बल्कि बहुत से पौधों का झुण्ड है जो एक साथ रहते हैं। काई को पनपने के लिए पानी आवश्यक है और वह भी सतह पर ही। इसलिए घर की दीवारें, पत्थर, चट्टान या अन्य जगह जो लगातार गीली बनी रहती हैं उन पर काई उग जाती है। यदि कुछ दिनों बाद यह स्थान सूख जाए, तो काई मर जाती है।



काई केवल हरे रंग की ही नहीं होती। यह कई बार भूरी, लाल, पीली आदि रंगों की भी दिखाई देती है।

काई बहुत ही पुराने ज़माने के जीवों जैसी है। और शायद यह बहुत पहले से पृथ्वी पर है। दुनिया के सभी हिस्सों में किसी न किसी प्रकार की काई पाई जाती है। समुद्र में, बर्फीले या गर्म प्रदेशों में भी वहाँ के मौसम के अनुकूल काई पाई जाती है।

माथापच्ची मई 2003 अंक के हल

1. चार शेर और इकतीस शुतुरमुर्ग! है न
2. एक साल के सभी महीनों में अट्ठाईस दिन तो होंगे ही!
5. बेशक सभी साल! हर साल क्रिसमस आएगा, साल आएगा तो नया साल भी आएगा।
6. बस तीन मोज़े!

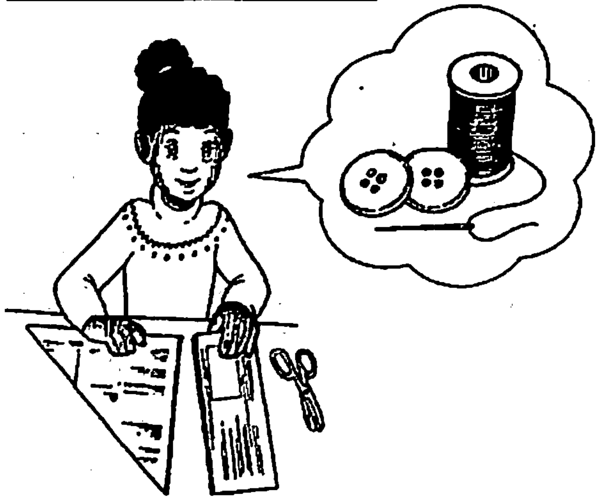
चित्र पहेली का हल

घु	❋	र	स	ना	❋	क	ढ़ा	ही
मं	❋	र	❋	❋	❋	मा	❋	❋
तु	ल	सी	❋	उ	फ	न	न	ली
❋	❋	कू	ड़ा	दा	न	❋	❋	ट
छि	❋	द	❋	ह	❋	चा	❋	र
ल	❋	❋	प	र	का	र	❋	❋
का	ला	हि	र	ण	❋	दी	प	क
❋	❋	मा	❋	❋	❋	वा	❋	ल
गौ	त	म	❋	दे	ह	री	❋	गी

खेल कागज़ का

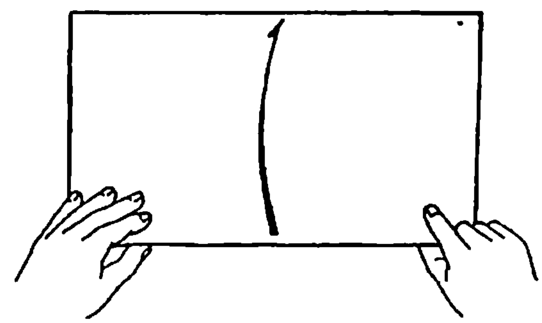
एक मज़ेदार पहेली

इस बार कागज़ की एक खेल पहेली बनाते हैं। इसके लिए जरूरत होगी ..... सुई धागा, कैंची, एक थोड़ा मोटा सा कागज़ या अखबारी कागज़ और हाँ दो थोड़ी बड़ी बटन भी !



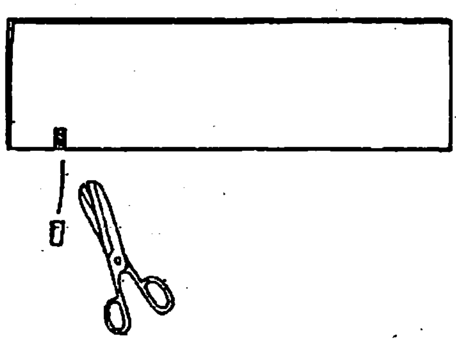
1.

इस आयताकार कागज़ को लम्बाई में मोड़कर आधा कर लो।

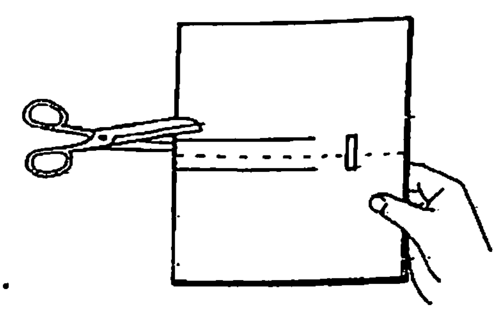


2.

बन्द हिस्से की तरफ से किसी भी सिरे पर एक कट लगा लो। हाँ एक बात का ध्यान रखना कि यह झिर्री बटन से थोड़ी छोटी होनी चाहिए यानी इस झिर्री से बटन आरपार न निकल पाए।

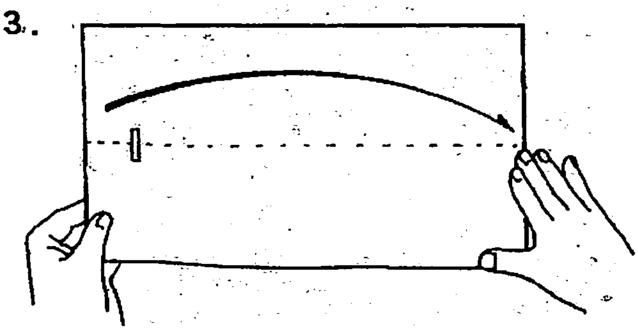


मोड़ खोल लो।
दाएँ बाएँ सिरों को मिलाकर कागज़ को एक बार और मोड़ लो।



4.

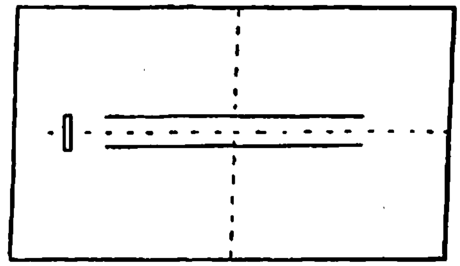
3.



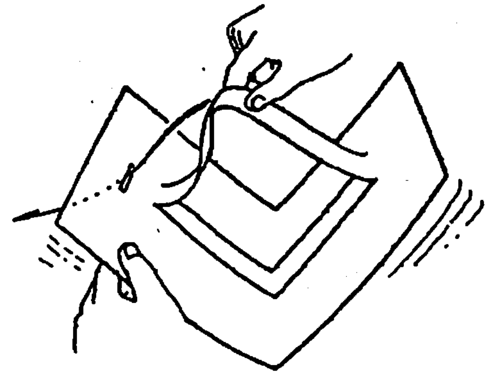
अब ज़रा सावधानी से दो कट लगाना है। चित्र की मदद से ये दो झिर्रियाँ बना लो। बस एक बात का ख्याल रखना कि ये दोनों कट पहले बनाई गई झिर्री से न मिलने पाएँ। और इन दोनों कटों से बनी झिर्री सिरे पर बनी एक छोटी झिर्री से कम चौड़ी होनी चाहिए।

5.

इन दोनों कटों से बनी पट्टी को छोटी झिर्री से निकालना है। बाहर एक छल्ले सरीखी आकृति बन जाएगी।



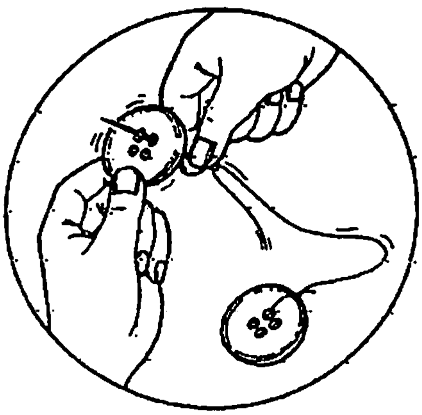
(अ)



(ब)

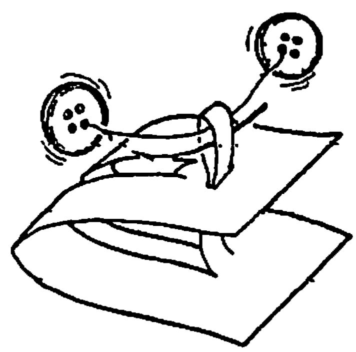
6.

अंदाजन दो फुट लम्बा धागे के दोनों सिरों पर एक-एक बटन बाँध दो। इनमें से एक बटन को छल्ले से निकाल दो।



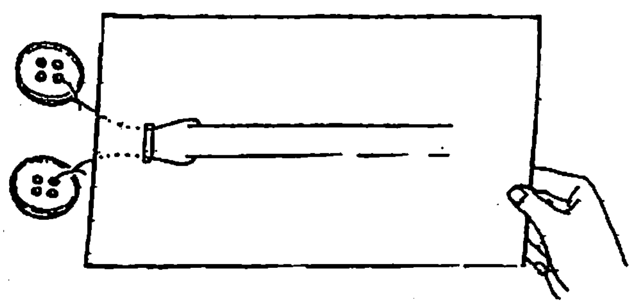
7.

इस छल्ले को झिर्री से बाहर निकाल लो।



8.

बस खेल पहेली तैयार है।
अब अपने किसी मित्र को बुलाओ और कहो कि वो बग़ैर धागा तोड़े और बग़ैर कागज़ फाड़े इस धागे को बाहर निकाल कर दिखाए।







अरसे बाद एक अच्छी किताब हाथ लगी! सोचा तुम्हें भी बताया जाए! लगा कुछ ऐसे व्यक्तियों की कोशिश है जो तुम्हें बराबरी का दर्ज़ा देते हैं।

सॉरी बेस्ट फ्रैण्ड नाम के इस कथा संग्रह में एक थीम पर दस कहानियाँ हैं। कुल पन्ने हैं सत्तर! कुछ को छोड़कर बाकी कथाओं की लम्बाई भी ठीकठाक है।

ये कहानियाँ उन लड़ाई-झगड़ों पर हैं जो हमारे आसपास उन लोगों के बीच होते हैं जो अलग-अलग तरीकों से ईश्वर की पूजा या इबादत करते हैं।

चलो कुछ कहानियाँ हम भी पलटते हैं। 'कछुए कहाँ गए' आठ-नौ पन्नों लम्बी कहानी है। इस कहानी में एक और कहानी बुनी हुई है जो कुछ आकर्षक है। इसमें मकर नाम का एक मगर एक-एक कर दूसरे रेंगने वाले साथियों को जंगल से बेदखल कर देता है। वह बड़ा ताकतवर है इसलिए चाहते हुए भी कोई उसका विरोध नहीं कर पाता है। हर बार वो तर्क देता है कि फलाँ के चले जाने से हमें उसके हिस्से की चीज़ें भी मिल जाएँगी। फिर कुछ ऐसा होता है कि मकर अपने सभी साथियों को वापिस बुलाता है। ऐसा क्या होता यह किताब पढ़कर पता लगाना।

पोइली सेनगुप्ता की लिखी 'बत्ती बदल गई' एक सटीक कहानी है। इस कथा संग्रह की बेहतरीन कहानी शायद यही है। अखबार बेचने वाले एक बच्चे की कहानी में उसकी दोस्ती अनायास ही अखबार खरीदने वाले एक व्यक्ति से हो जाती है। बत्ती के जलने बुझने के बीच ही उनकी बातें हो पाती हैं। ये सम्वाद दिलकश हैं। कहानी की जान हैं। उन्हीं दिनों समीर के शहर मेरठ में दंगे होते हैं। फिर क्या होता है, ये किताब बताएगी।

'सुरंग' भी एक उम्दा कहानी है। इसमें कहानी का हीरो अंकुश रेलगाड़ी से कहीं जा रहा होता है। जब रेल सुरंग से गुज़रती है तो उसे बड़ा डर लगता है। इस बार उसके साथ न तो मम्मी होती है और न पापा! जब सुरंग आती है तो वह डर जाता है। तभी सामने की सीट पर रखे सामान में हलचल होती है। दो हाथ निकलते हैं और उसे गोद में ले लेते हैं। जब पढ़ते हुए तुम इसका राज़ जानोगे तो तुम्हें हँसी आ ही जाएगी।

ये कहानियाँ हैं ही इतनी अच्छी कि मैंने इन्हें बार बार पढ़ा। लेकिन कुछ चीज़ें हर बार खटकती रहीं। जैसे 'और' का प्रयोग बहुत ज़्यादा बार होना। जैसे इन कहानियों का अनुवाद। कहीं-कहीं वाक्यों की बनावट बड़ी ऊबड़-खाबड़ हो गई है। पर कुल मिलाकर अच्छे चित्रों वाली एक बेहतरीन किताब है यह।

समीक्षा : सुशील शुक्ल



किताब	:	सॉरी बेस्ट फ्रेण्ड
सम्पादक	:	गीता हरिहरन व शमा फ़तेहअली
चित्रकार	:	रंजन दे
प्रकाशक	:	तुलिका
कीमत	:	तीस रुपए

इक्यावन बाल कविताएँ

प्रकाश मनु का कविता संग्रह 'इक्यावन बाल कविताएँ' पिछले दिनों हमें मिला। सोचा यह भी तुम सबके साथ बाँट लें। जैसा कि इसके नाम से ही झलकता है, इस किताब में 51 कविताएँ हैं - वह भी बच्चों के लिए। इनमें से कुछ कविताएँ बहुत सरल और मज़ेदार हैं। पशु, पक्षी, जंगल, पानी आदि के अलावा मौसम पर भी कुछ कविताएँ हैं। मौसम के हिसाब से तो कविता पढ़ी ही जा सकती हैं। तुम चाहो तो बरसात के मौसम में गर्मी या फिर गर्मी के मौसम में शिमला या ऊटी का मज़ा भी ले सकते हो! लो देखो -

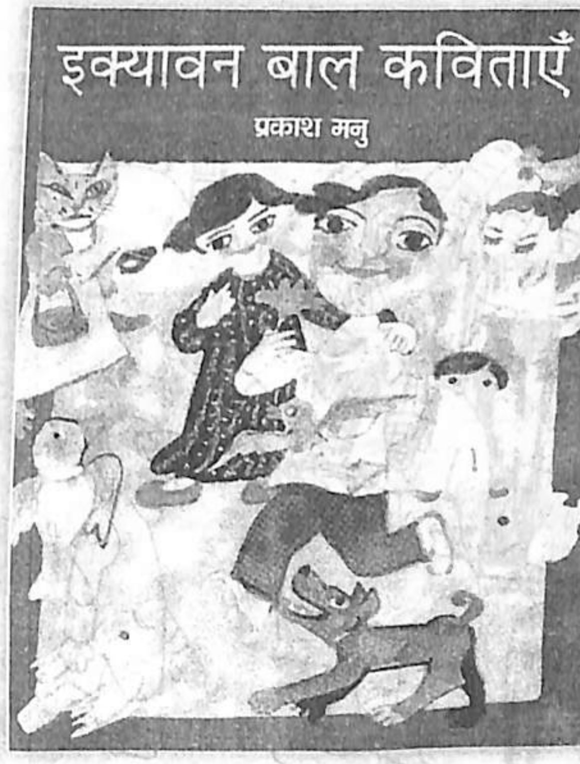
कभी तो लू-लपट अंगार हैं ये गर्मियों के दिन
कभी लगता हमें उपहार हैं ये गर्मियों के दिन
कभी हैं केवड़ा-लस्सी, कभी शरबत कभी कुलफी
अजी ठण्डाई की बौछार हैं ये गर्मियों के दिन
हुई छुट्टी पढ़ाई से, चलो शिमला चलो ऊटी,
पहाड़ों पर तो मज़ेदार हैं, ये गर्मियों के दिन।

और अगर तुम्हें सर्दियों का मज़ा लेना हो तो यह कविता पढ़ो -

संदूकों से
निकले कोट
स्वेटर, कंबल
शाल, रज़ाई
दैया ऐसी सर्दी आई।

पर अब तो मौसम बरसात का है। चलो बरसात की कविता पढ़ते हैं -

वर्षा रानी
फिर से पहनो
साड़ी बादल-बूटे वाली
खेत-खेत में
अंकुर फूटें
झूम-झूम नाचे हरियाली



इस किताब में चिड़िया, गिलहरी, बिल्ली, खरगोश की कविताएँ भी हैं। साथ ही तुम्हारे परिवार की आपसी बातचीत, छोटे-बड़े भाई-बहनों और दोस्तों के बीच रोज़ाना होने वाली नोंक-झोंक पर भी कविताएँ हैं। पर ऐसा नहीं कि सभी कविताएँ एक ही स्तर की हैं। कुछ कविताओं को पढ़कर शायद तुम थोड़ा बोर भी हो जाओ। वैसे इतनी सारी कविताओं में से दो-चार अच्छी न भी लगें तो कोई बड़ी बात नहीं, है न। इस किताब के चित्र भी अच्छे हैं। हर कविता के साथ चित्र हैं, खूब बड़े-बड़े और आकर्षक। इन्हें तुम रंगने का मज़ा भी ले सकते हो! पर चित्र बनाने वाले का नाम नदारद है। 72 पेज की यह किताब मोटे कवर वाली है। थोड़ी महँगी है, 75 रुपए की।

समीक्षा : शिवनारायण गौर

किताब	:	इक्यावन बाल कविताएँ
लेखक	:	प्रकाश मनु
प्रकाशक	:	सावित्री प्रकाशन, दिल्ली
कीमत	:	पचहत्तर रुपए



हाजी बगलोल एक मज़ेदार कहानी है। इस कहानी का हर आठवाँ शब्द गायब है। बस तुम्हें इसी शब्द का अंदाज़ा लगाना है।

हाजी बगलोल

बहुत दिन हुए पाकिस्तान में एक सीधा सादा,नाटा मोटा और मस्तमौला व्यक्ति रहता था। उसका नाम था हाजी बगलोल! उसकी अजीब सी बकरे जैसी दाढ़ी थी। इस वजह से वह बकरे जैसा लगता ....। उसने अपनी सारी ज़िन्दगी गाँव में ही ....थी।

एक बार वह अपनी मौसी के घर ....गाँव गया। उसकी मौसी ने उसे तली.............. कलेजी खाने को दी। हाजी बगलोल ने .... कभी तली हुई कलेजी नहीं खाई थी।.............. बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने अपनी मौसी से.............. की विधि पूछी। मौसी ने कागज़ पर ....कर दे दी। हाजी बगलोल ने कागज़ ....बहुत सँभाल कर जेब में रख लिया। ....में उसने एक किलो कलेजी खरीदी। उसे ....में लिए वह गाँव की तरफ जा ....था कि एक चील ने देखा। चील ....कच्चा गोश्त बहुत पसंद है। बस उसने



.... से झपटा मारा और गोश्त को लेकर ....गई। पहले तो इस आकस्मिक हमले से ....बगलोल घबरा गया। जब उसने चील को ....उड़ते देखा तो ठठाकर हँस पड़ा। कुछ ....ने यह सब कुछ देखा। उनको यह ....बड़ा आश्चर्य हुआ कि हाजी बगलोल ज़ोर ....से हँस रहा है। मानो कोई बहुत ....की घटना घटी हो। तुम हँस क्यों .... हो? एक आदमी ने पूछा।

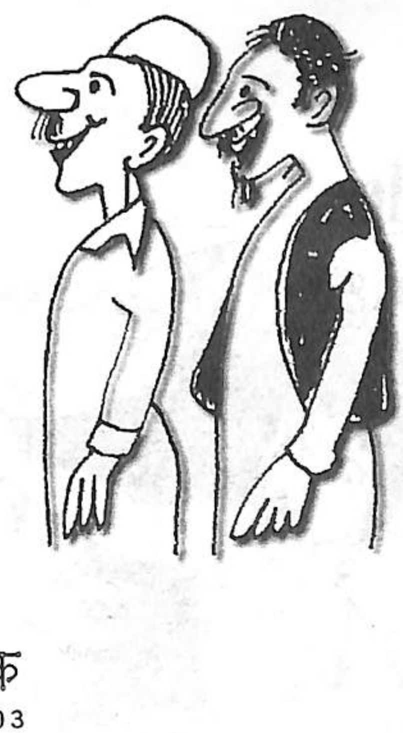


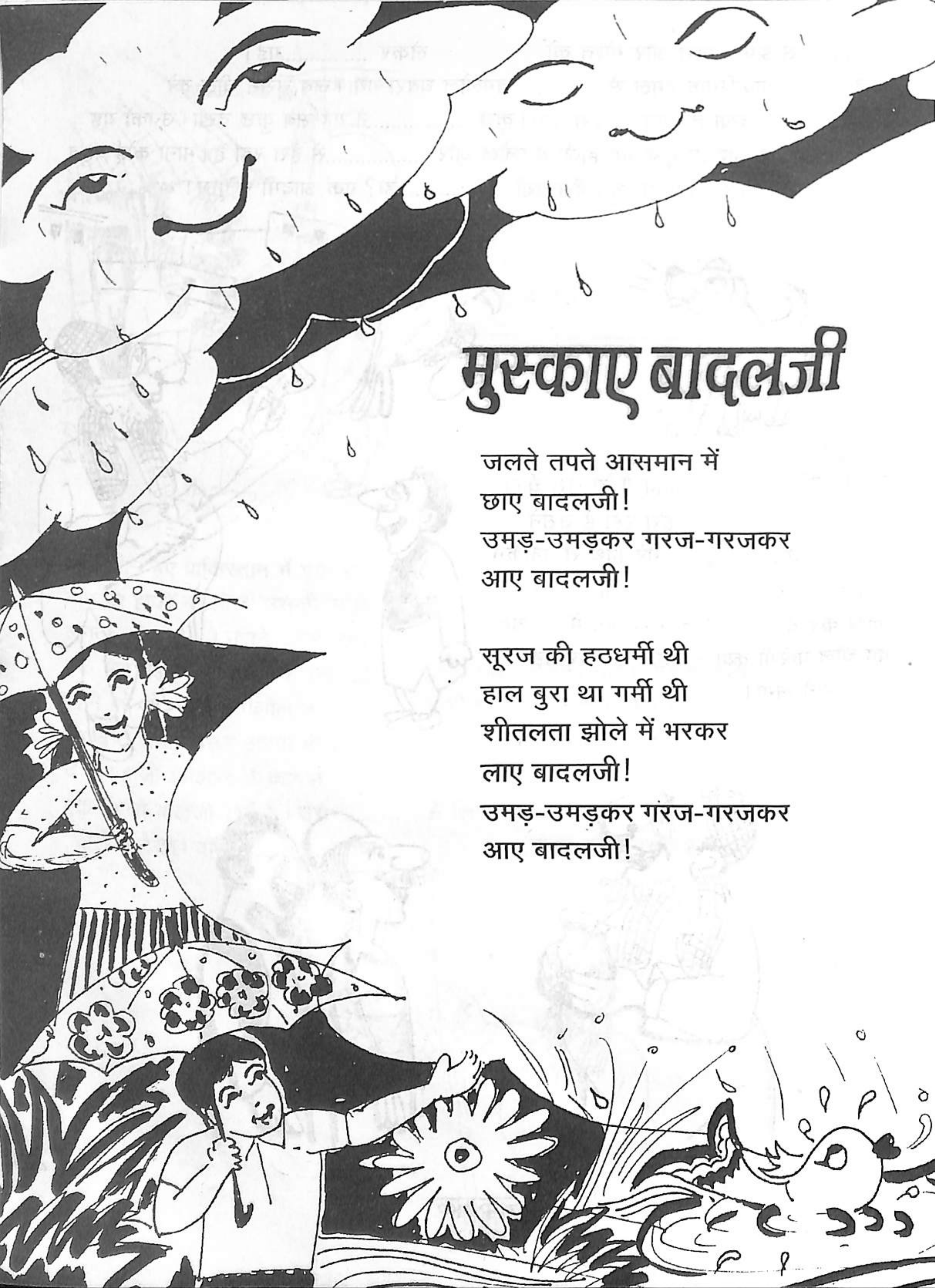


उसने खुशी ....कहा मैं तो उस चील की बेवकूफी ....हँस रहा हूँ उसने गोश्त तो छीन ....मेरे हाथ से, लेकिन उसको बनाने की .... जो मौसी ने लिख कर दी थी। वह तो मेरी जेब में है। अब वह चील करेगी क्या ? यह कहकर वह फिर हँसने लगा।

सभी चित्र....कैलाश दुबे



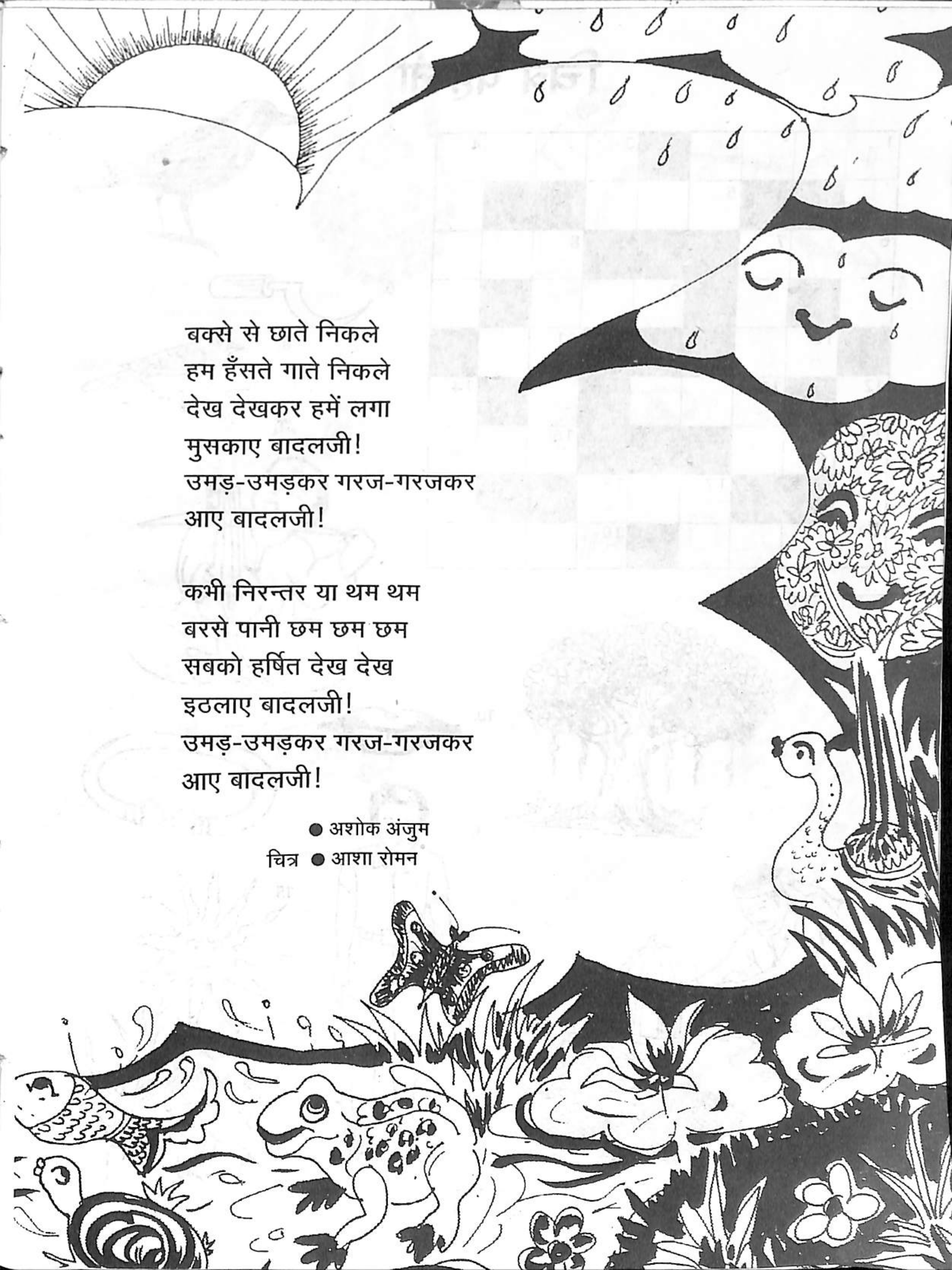




मुस्काए बादलजी

जलते तपते आसमान में
छाए बादलजी!
उमड़-उमड़कर गरज-गरजकर
आए बादलजी!

सूरज की हठधर्मी थी
हाल बुरा था गर्मी थी
शीतलता झोले में भरकर
लाए बादलजी!
उमड़-उमड़कर गरज-गरजकर
आए बादलजी!



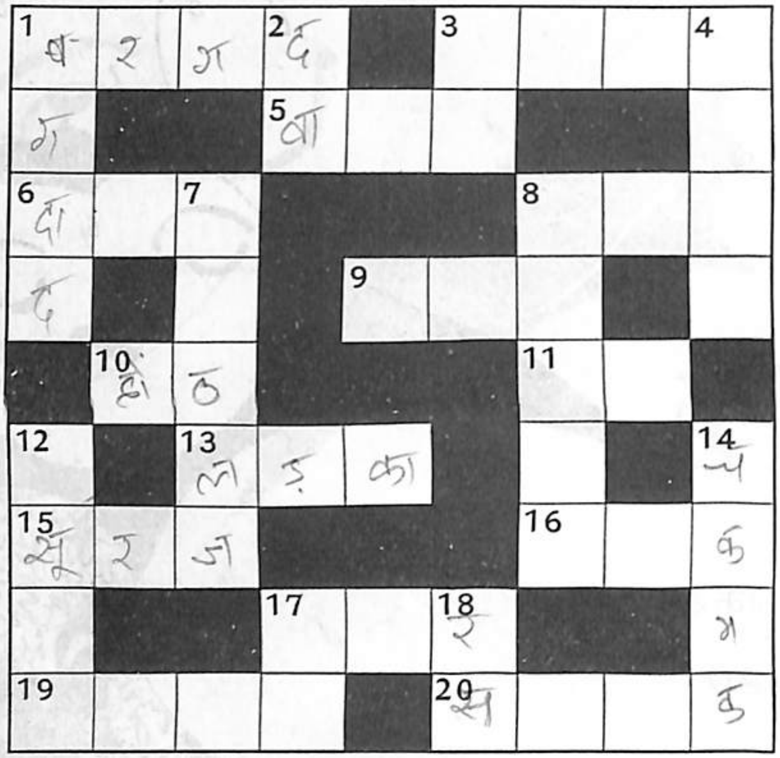
बक्से से छाते निकले
हम हँसते गाते निकले
देख देखकर हमें लगा
मुसकाए बादलजी!
उमड़-उमड़कर गरज-गरजकर
आए बादलजी!

कभी निरन्तर या थम थम
बरसे पानी छम छम छम
सबको हर्षित देख देख
इठलाए बादलजी!
उमड़-उमड़कर गरज-गरजकर
आए बादलजी!

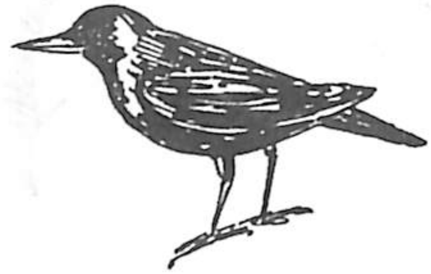
● अशोक अंजुम

चित्र ● आशा रोमन

चित्र पहेली



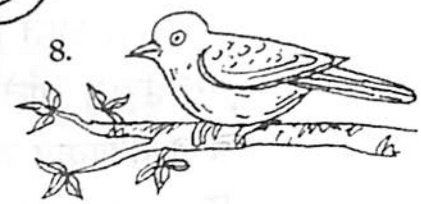
5.



6.



8.



9.



संकेत : बाएँ से दाएँ

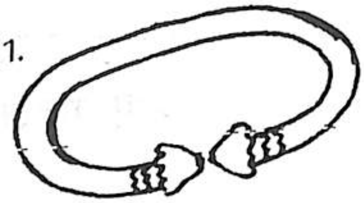
1.



10.



11.



3.



13.

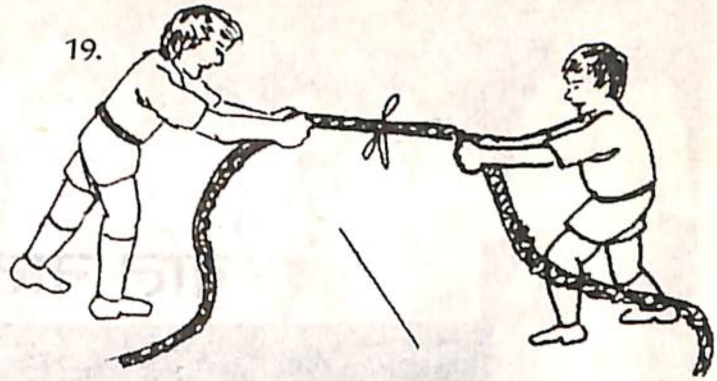


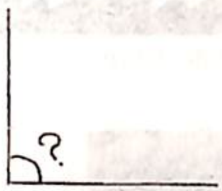
15.



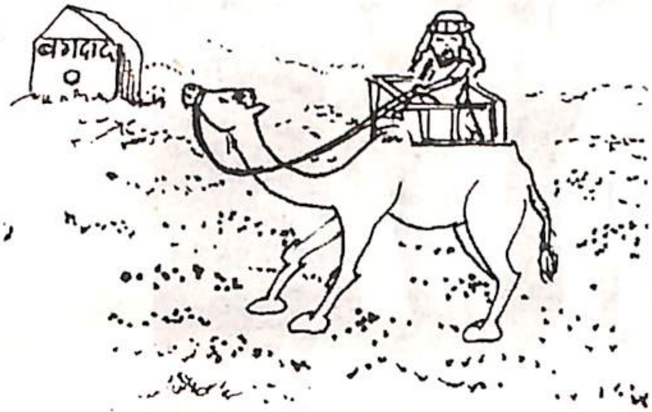
16.

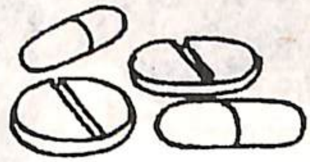

17.

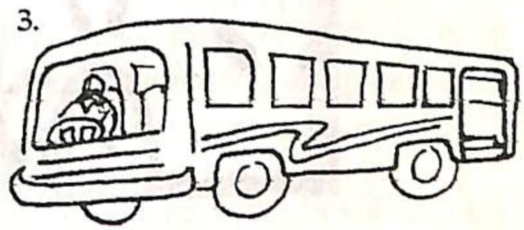

19.


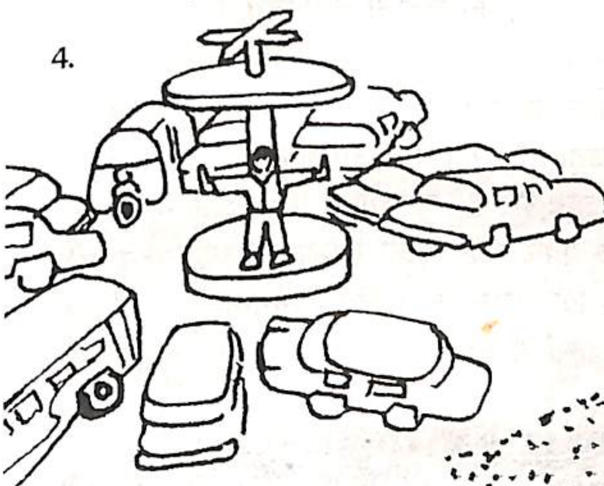
20.


संकेत : ऊपर से नीचे

1.


2.


3.


4.


7.


8.


12.


14.


17.


18.


चित्र : कैलाश दुबे

चकमक समाचार

बाल नाट्य समारोह



जून के आखिरी हफ्ते में भारत भवन, भोपाल में बाल नाट्य समारोह का आयोजन हुआ। इस समारोह को त्रिकर्षि एवं रंगमंडल, भारत भवन ने साथ मिलकर आयोजित किया। पाँच दिन के इस कार्यक्रम में दस बाल नाटकों का प्रदर्शन किया गया।

पहले दिन **अप्सरा का तोता** नाटक के साथ इस समारोह की शुरूआत हुई। डायनामिक बाल रंग समूह ने इस नाटक को प्रस्तुत किया। इस नाटक का मूल यह था कि व्यक्ति को अपना काम खुद करना चाहिए। इसी दिन **खिलौनों का देश** नाटक की प्रस्तुति भी हुई। प्रमुख रूप से यह नाटक इस बात पर केन्द्रित था कि हमें अपनी चीजें संभालकर रखना चाहिए। दूसरे दिन **गिरगिट** नाटक खेला गया। इस नाटक के मूल लेखक अन्तोन चेखब हैं। सफ़दर हाशमी ने इसे रूपांतरित किया है। इसी दिन **भगत** नाटक भी प्रस्तुत किया गया।

तीसरे दिन **टिल्लू की कहानी** तथा **जूते** की प्रस्तुति की गई। टिल्लू की कहानी नाटक ऐसे बच्चे के बारे में था जो बहुत सीधा सादा है। सब लोग उसके सीधेपन का फ़ायदा उठाते हैं। यह बच्चा समझदार तो हैं परन्तु पढ़ाई में कमज़ोर है। जूते भाग्य पर भरोसा करने वाले एक युवक की कहानी है। अंत में यह नाटक यही कहता है कि हमारा भाग्य कर्म से बनता है अन्धविश्वासों से नहीं।



हाय रे पानी और **नजानू के किस्से** की प्रस्तुति नाटक समारोह के चौथे दिन हुई। हाय रे पानी नाटक में पानी की समस्या को उजागर किया गया था। नजानू के किस्से ज़ोर देता है कि जो भी काम करो पूरी मेहनत, लगन व ध्यान से करो। ऐसा करने से तुम उस काम के जादूगर बन जाओगे। इस नाटक का लेखन कविता सुरेश ने किया है।



पाँच दिनी इस नाट्य समारोह के अंतिम दिन **कुँहु रानी की चल गई चाल** तथा **गणपति बप्पा मोरिया** नाटकों का प्रस्तुतिकरण किया गया। कुँहु रानी की चल गई चाल नाटक पुरानी प्रचलित कहानी व रूढ़ियों पर आधारित नाटक था। गणपति बप्पा मोरिया की कहानी वैज्ञानिक आधार पर केन्द्रित थी। इस कहानी से हमें पता चलता है कि भले ही हम 21वी सदी की ओर बढ़ रहे हों लेकिन कई मामलों में हम विनाश की ओर भी अग्रसर हैं।

इस नाट्य समारोह को काफी दर्शकों ने देखा तथा खूब सराहा। बच्चों की प्रस्तुतियाँ अत्यंत आकर्षक थीं। इन नाटकों का प्रस्तुतिकरण अलग अलग दिन अलग अलग समूहों के द्वारा किया गया। इसमें मुख्य रूप से डायनामिक रंग समूह, जवाहर बाल भवन, द थ्रॉब, रंग विदूषक, त्रिकर्षि नाट्य संस्था शामिल थीं। नाटकों के निर्देशन में रंजीत चौधरी, के जी त्रिवेदी, अमित रिछारिया, प्रकाशसिंह की भूमिका अच्छी रही। प्रत्येक नाटक में संगीत काफी प्रभावी रहा।

इस पूरे कार्यक्रम की आयोजक संस्था त्रिकर्षि थी । इस संस्था का उद्देश्य युवाओं और बच्चों के नैतिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक विकास के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना है। संस्था नाटकों के माध्यम से भी अपने उद्देश्य के लिए काम कर रही है। बच्चों और युवाओं के लिए नाटक,संगीत एवं नृत्य के लिए कार्यशालाओं का आयोजन भी त्रिकर्षि करती है।



रपट .....*शिवनारायण गौर*



खेल समाचार

फुटबाल

फुटबाल के लिए पिछला हफ्ता दुखद रहा। कंफेडरेशन कप का सेमीफायनल मुकाबला चल रहा था। कोलम्बिया इस मुकाबले में तेज तर्रार अफ्रीकी चैम्पियन कैमरून की टीम के साथ जूझ रही थी। मैच के बहत्तरवें मिनिट में मैच की स्थिति थी.....कैमरुन एक-शून्य से आगे थी। तभी तेईस नम्बर की जर्सी पहने एक मिड फील्डर अचानक मैदान पर गिरता है। इस मिडफील्डर का नाम है मार्क विवियन फो। कुछ ही देर में उन्हे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। कैमरुन के खिलाड़ियों ने तय किया है कि फायनल मुकाबले में सभी खिलाड़ी इस शानदार खिलाड़ी के नम्बर यानी तेईस नम्बर की जर्सी पहनेंगे। फीफा यानी फुटबाल की सबसे बड़ी संस्था अगला कंफेडरेशन कप उनके नाम से करवाएगी।



लॉन टेनिस

इन दिनों खेल दुनिया में विम्बलडन मुकाबलों की चर्चा है। विम्बलडन के मुकाबले घास के कोर्ट पर होते हैं। जून की आखिरी तारीख तक की स्थिति यह थी ...पिछले चैम्पियन लेटन हेविट बाहर हो चुके हैं। अब मैदान में हैं ऑन्द्रे अगासी,एंडी रोडिक और रोज़र फेडरर!

उधर महिला वर्ग में सेरेना और वीनस के अलावा किम क्लिस्टर्स,जस्टिन हेनिन हैं। हमारे लियण्डर पेस और महेश भूपति भी मिश्रित और युगल मुकाबलों में बढ़िया खेल दिखा रहे हैं।







क्रिकेट

सालों बाद हमारी जूनियर क्रिकेट टीम हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान से मैच खेलेगी। इस त्रिकोणीय श्रृँखला में तीसरी टीम हमारे एक और पड़ोसी देश श्रीलंका की होगी।

हॉकी

इन दिनों हमारी हॉकी टीम गज़ब के फार्म में है। पिछले कुछ महीनों में उसने कुछ शानदार टीमों की धुलाई की है। स्पेन,जर्मनी और अर्जेण्टीना जैसी टीमों को हराकर भारतीय हॉकी टीम ने हैम्बर्ग मास्टर्स प्रतियोगिता जीत ली है।

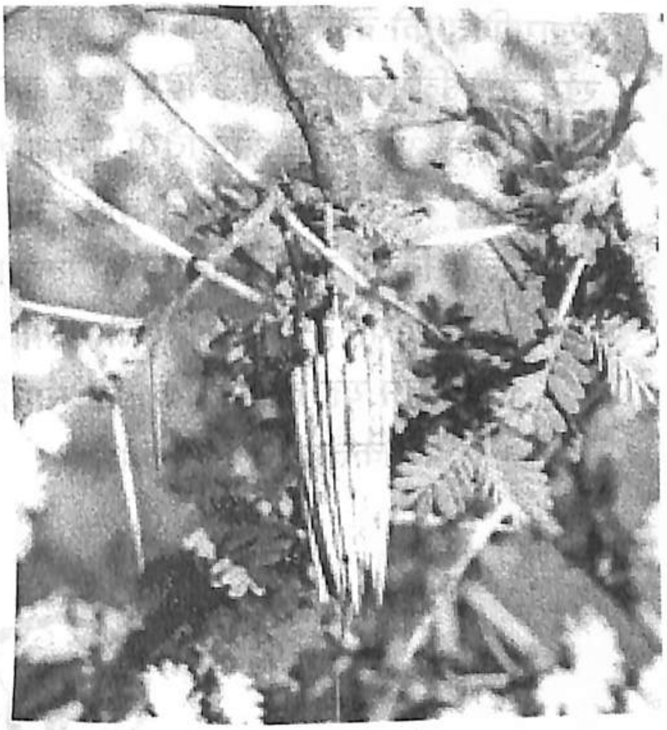
काँटों से बना एक घर

बरसात का मौसम है। मैं एक बगीचे घूम रहा था कि अचानक मुझे ज़मीन पर काँटों का एक गुच्छा चलता हुआ दिखाई दिया। मैं थोड़ी देर के लिए तो चौंक गया। जब ध्यान से देखा तो पाया कि काँटों के गुच्छे के बीच कोई नन्हा जीव दुबका हुआ है। जब उसको एक तिनके से छेड़ा तो उसने अपना सिर कछुए की तरह अंदर घुसा लिया। मेरे लिए यह एक अजीब घटना थी। इतने ध्यान से मैंने पहले कभी इस काँटों वाले कीड़े को नहीं देखा था। जब छानबीन की तो पता चला कि काँटों में छिपे महाशय एक कीट की लार्वा है।

दरअसल यह एक किस्म का पतिंगा होता है। पतिंगे के बारे में तो तुम जानते ही होगे। पतिंगे दिखने में तितली जैसे होते हैं। लेकिन ये रात को निकलते हैं। एक और अंतर होता है तितली और पतिंगे में! तितली जब बैठती है तो उसके पंख उठे होते हैं। जबकि पतिंगे के पंख ज़मीन पर फैल जाते हैं।

काँटों वाले इस जीव को बरसात में इधर उधर घूमते हुए देखा जा सकता है लेकिन बाकी दिनों में किसी बागड़ में बबूल के पेड़ से चिपके हुए मिलेंगे। मादा कीट बरसात में अण्डे देती है। इन अण्डों में से जो लार्वा निकलते हैं वे तुरंत ही काँटों से अपने चारों ओर एक आवरण बना लेते हैं। काँटे के इस आवरण के भीतर लार्वा रेशम का अस्तर चढ़ा लेता है। काँटों में रहने वाला यह लार्वा घुमक्कड़ होता है। इस दौरान खूब खाता है। कुछ समय के बाद यह खुद को किसी टहनी से चिपका लेता है। यह इसकी प्यूपा अवस्था होती है। प्यूपा अवस्था में जीव एक खोल में बन्द हो जाता है। और खाना पीना भी बन्द कर देता है। कीट एक साल तक इस खोल में रहता है। आगे का मामला तो और भी मज़ेदार है। अगली बरसात के पहले यदि किसी खोल में नर जीव है तो बाहर निकलता है। इस दौरान इसमें पँख आ जाते हैं। यदि यह जीव मादा हुई तो वह खोल से कभी बाहर नहीं निकलती। जन्म भी इसी खोल में लेती है। और इसी खोल में आखिरी साँस भी लेती है। यानी मादा वयस्क बनने पर भी कभी भोजन नहीं करती है।

अब नर कीट मादा वाले काँटे के खोल को ढूँढता है।



नर इस खोल में छेद करके मादा के शरीर में शुक्राणु प्रवेश करा देता है। कुछ समय बाद मादा अण्डे देती है। इन अण्डों के फूटने पर लार्वा निकलते हैं। और अब ये अपने लिए काँटों के नए घरौंदे बनाते हैं। एक खास बात और! ये नए जीव कभी भी पुराने घरौंदे नहीं चुनते।

कहीं अगर तुम्हें काँटों के घर वाला कीट चलता फिरता या किसी टहनी से चिपका मिले तो ध्यान से देखना। यह भी देखना कि वह किस सलीके से काँटों को चिपकाता है। उस कीट ने घरौंदा बनाने के लिए कौन सी चीजें जुटाई हैं.... नीम की बारीक टहनियाँ या कुछ और!

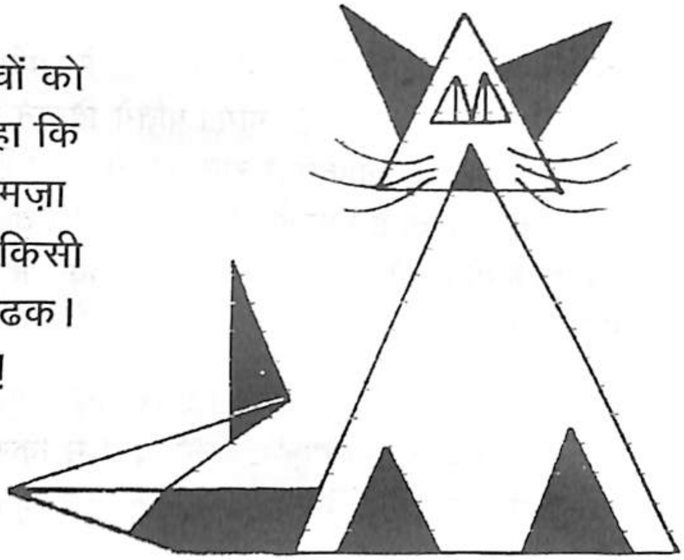
– के. आर. शर्मा

हाँ अपने अनुभव हमें जरूर भेजना।



माथापच्ची

1



रेखागणित की क्लास में आज दीदी ने सब बच्चों को खूब सारे त्रिभुज के टुकड़े दिए और उनसे कहा कि जो मन में आए वैसी आकृतियाँ बनाओ। खूब मज़ा आया सारे बच्चों को। किसी ने चूहा बनाया तो किसी ने बिल्ली, किसी ने पेड़ बनाया तो किसी ने मेंढक। सुरैया ने यह बनाई – बिल्ली यानी म्याऊँ!

अब तुम यह बताओ कि इस म्याऊँ में

कितने त्रिभुज छिपे हैं?

2

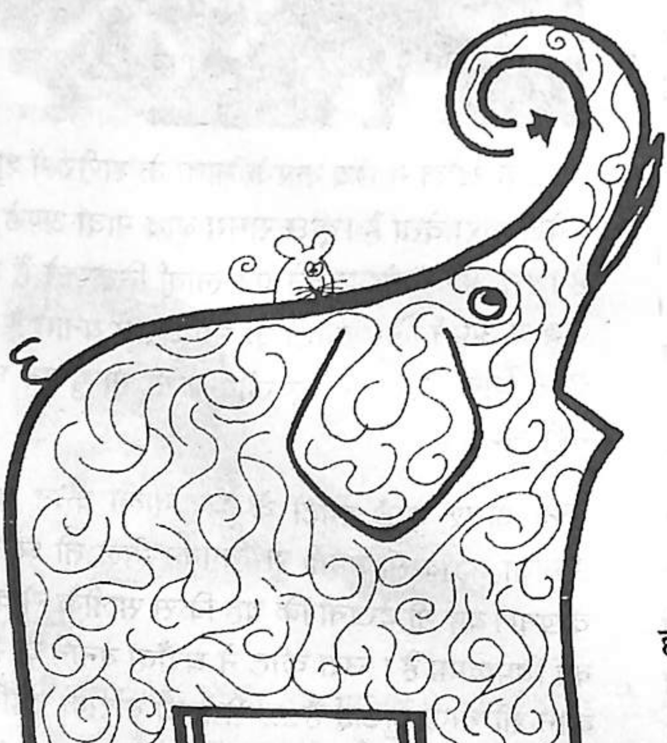
तुम 20 को यूँ भी लिख सकते हो –

$$20 = 5 \times 5 - 5$$

और यूँ भी,

$$20 = 4 \times 4 + 4$$

इसी तरह क्या किसी भी अंक का तीन बार इस्तेमाल करके व गणित के निशान लगाकर तुम 24 और 30 भी लिख सकते हो?



3

हाथी दादा सूँड़ उठाए खड़े हैं, तुम्हें घुमाने ले जाने के लिए। पर पहले तुम यह पहेली तो बुझाओ। उनके पैर से घुसकर सूँड़ से बाहर निकलने का रास्ता ढूँढना है। जो पहले ढूँढ लेगा हाथी दादा उसको सवारी कराएँगे!

4

यहाँ कुछ सब्ज़ियाँ वाक्यों के बीच छिप गई हैं। क्या तुम उन्हें ढूँढने में हमारी मदद करोगे?

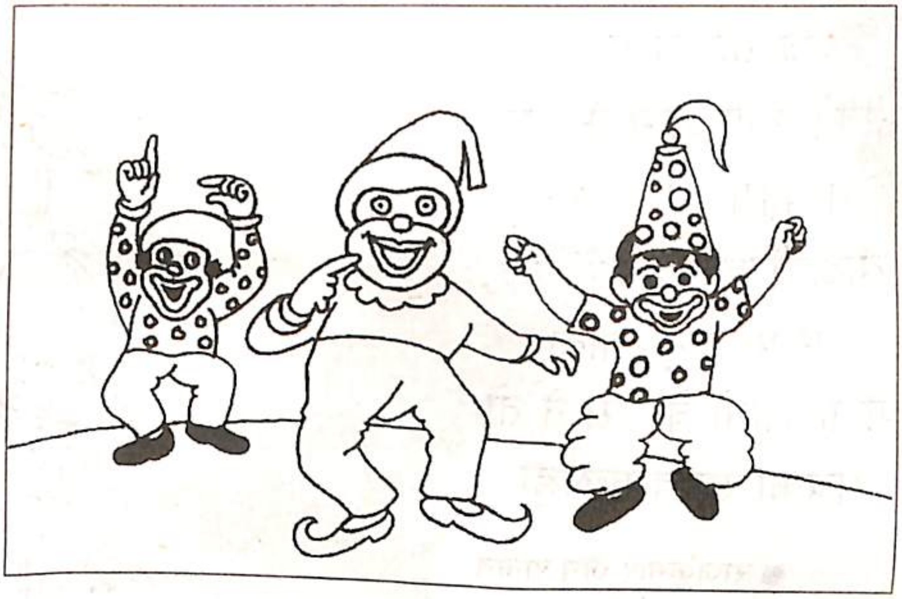
1. मोमबत्ती की लौ की रोशनी है।
2. जो करे लापरवाही से काम, वो पाछे पछताए।
3. कारगिल की वादियों में खुबानी लगती हैं।
4. बारिश तो है पर मेंढक कम टरटरा रहे हैं।
5. बचेन्द्री पाल कल एवरेस्ट पर चढ़ेंगी।

5

हाथी शब्द सुनते ही दिमाग में कुछ तस्वीर सी बनने लगती है। और कुछ शब्द भी तैरने लगते हैं, जैसे भारी-भरकम, धम्मक-धम्मक आदि। तो नीचे लिखे शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में ऐसे कौन से शब्द आते हैं ?

1. घर	2. छुट्टी	3. रात
4. पिटाई	5. आम	6. चन्दा मामा

6



सर्कस के ये तीन जोकर क्या तमाशा कर रहे हैं, देखो ज़रा। क्या इन दो चित्रों में तुम्हें कुछ फर्क नज़र आ रहे हैं। कितने फर्क हैं, ढूँढकर बताओ।



चित्र....कैलाश दुबे

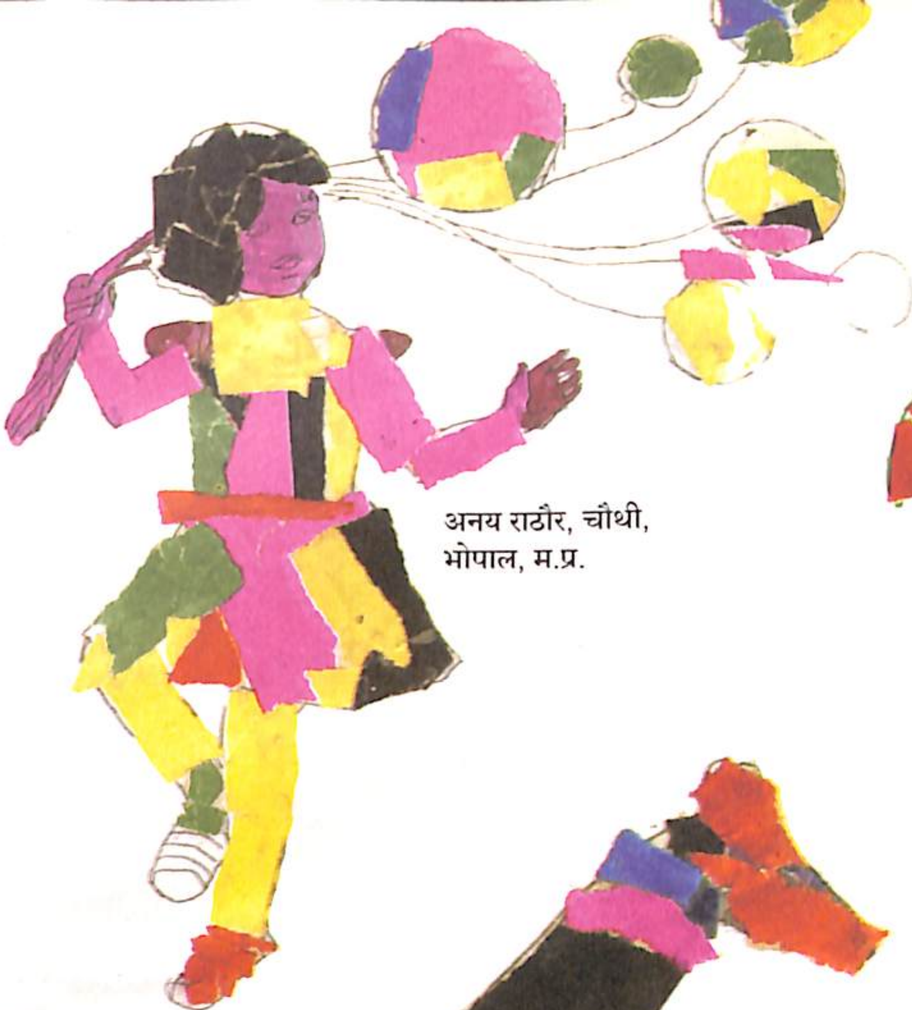
आमों का रस

आमों की प्यारी खुशबू ने
ऐसा रंग जमाया
सब्ज़ी लेने गया था भालू
आम लिए घर आया।
याद रहे ना आलू उसको
याद रही ना गोभी
फीकी लगी आम के आगे
तरकारी थी जो भी
बादामी मीठे आमों का
रस पी गाढ़ा-गाढ़ा
बोला आमों के रस ने तो
सबका स्वाद पछाड़ा

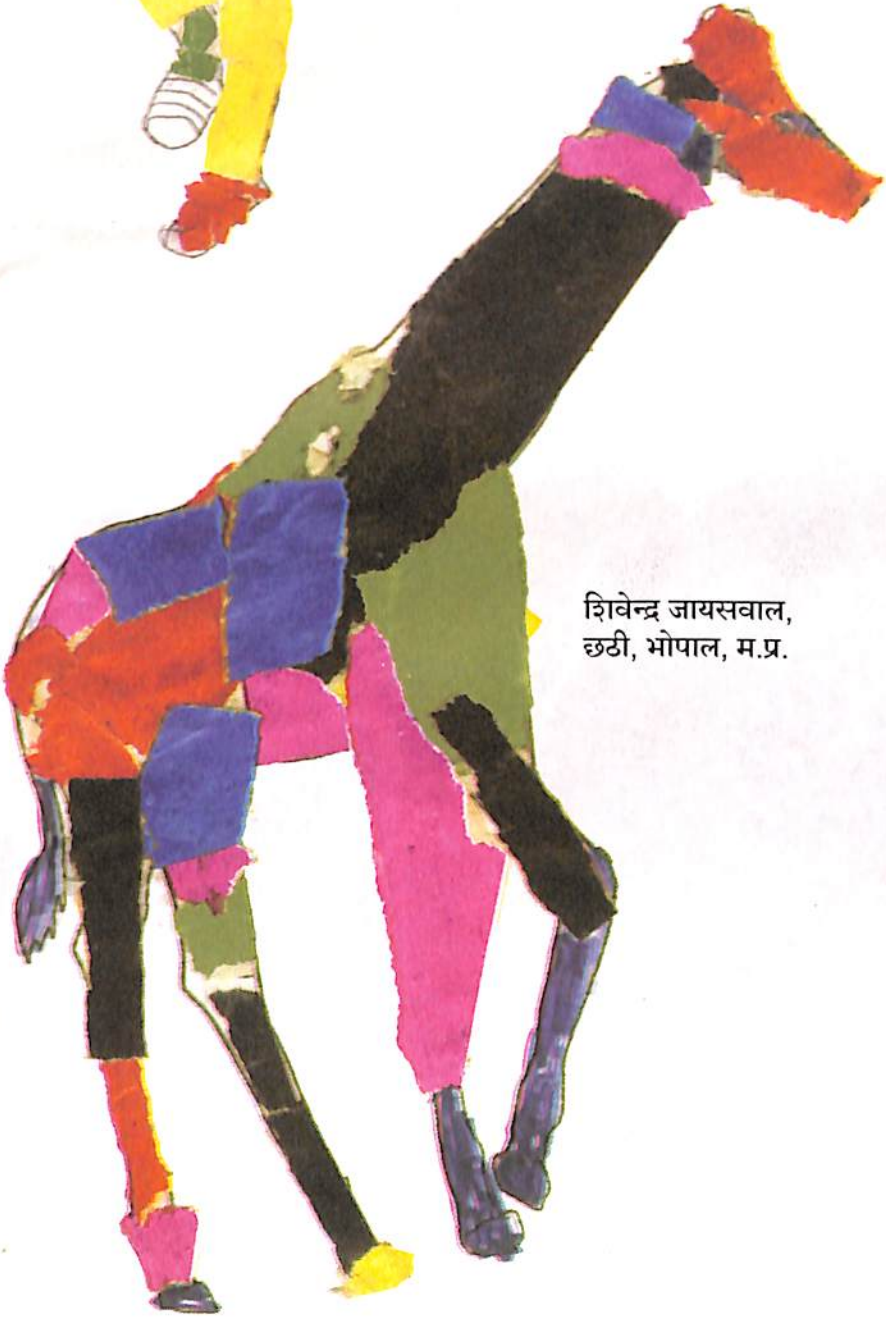
● राजकुमार जैन राजन

चित्र ● कैलाश दुबे





अनय राठौर, चौथी, भोपाल, म.प्र.



शिवेन्द्र जायसवाल, छठी, भोपाल, म.प्र.



कल्पना, 8 वर्ष, भोपाल, म.प्र.



हलेश कुमार सेन, अर्जुन्दा, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना